ज्ञानामृत

दिसंबर, 1982
वर्ष 18 ❋ अंक 6

मूल्य 1.25

1

2

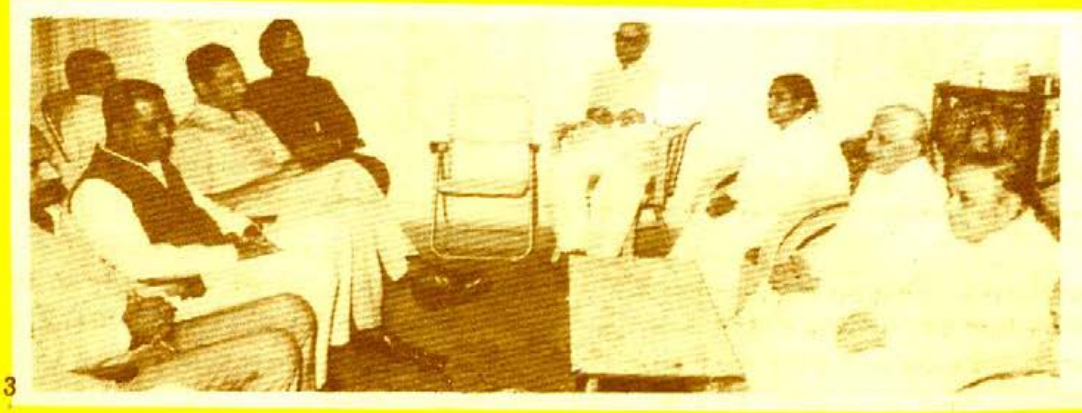

3

गोविन्दपुरी (नई दिल्ली) में मानव उत्थान शान्ति मेले के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० प्रकाशमणि जी, मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय, शिव ध्वजारोहण करते हुए। चित्र में इस अवसर पर उपस्थित हैं ब्र० कु० सुन्दरी, आशा, रुकमणी, कमलमणि, विद्यासागर जी, धर्मपाल जी तथा अन्य भाई बहिन।

भठिंडा में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए जी. एस. गिल, डी. सी., उनका साथ दे रही हैं ब्र० कु० कमलेश, सुदेश जी तथा अन्य।

भूपाल में मध्यप्रदेश के राज्यपाल भ्राता भगवतदयाल शर्मा द्वारा राजयोग भवन का शिलान्यास रखा गया। चित्र में ब्र० कु० प्रकाशमणि जी साथ में हैं।

बंगाल के प्रसिद्ध दुर्गोत्सव के उपलक्ष पर कलकत्ता में बड़ा बाजार सत्यनारायण पार्क में आयोजित विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन दीप जला कर करते हुए ब्र० कु० निर्मलशान्ता, प्रशासिका पूर्वी क्षेत्र स्थित ब्र० कु० ई० विश्वविद्यालय सेवा केन्द्र, तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता राधाकृष्ण मोर।

मुख पृष्ठ से सम्बन्धित

1 कास्की जिला के 25 सौ जिला सभा के उद्घाटन में आए हुए नेपाल के प्रधान मन्त्री भ्राता सूर्य बहादर थापा जी को ईश्वरीय सन्देश देकर शिव बाबा का चित्र भेंट करती हुई ब्र० कु० परनीता जी, साथ में खड़ी हैं ब्र० कु० लक्ष्मी जी।

2 भूपाल में विश्व शान्ति सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर प्रवचन करते हुई आदरणीया प्रकाशमाणि जी। साथ में भ्राता भगवतदयाल शर्मा राज्यपाल महोदय, रेन्वेयु मन्त्री टुम्मनलाल जी भी विराजमान हैं।

3 माऊंट आबू स्थित पाण्डव भवन में दीदी जी तथा दादी जी से मिलते हुए डी. आई. जी. बीकानेर, डी. आई. जी. हैदराबाद, पुलिस आयुक्त राजकोट, तथा डी. आई. जी मनीपुर-त्रिपुरा।

नई दिल्ली-गोबिन्दपुरी में हुए मानव उत्थान शान्ति मेले के समापन समारोह में सम्बोधन करती हुई प्रमिला बाई चवन, सदस्य राज्यसभा। उन के दाएं ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी, सुन्दरी जी तथा बाईं ओर ब्र० कु० राजकुमार मित्तल, अतिरिक्त चीफ इन्जीनियर डेसु, विराजमान हैं।

राजस्थान के राज्यपाल की पत्नी सत्या मेहरा के जयपुर स्थित आध्यात्मिक संग्रहालय में पधारने पर उन्हें श्रीकृष्ण का चित्र भेंट किया गया। चित्र में ब्र० कु० सुषमा तथा ब्र० कु० रत्न-मोहिनी जी चित्र भेंट करते हुए।

दुर्ग में विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्-घाटन भिलाई के नगर प्रशासक भ्राता गोपाल निधि शर्मा ने किया। साथ में ब्र० कु० विमला एवं कुमुद दिखाई दे रही हैं।

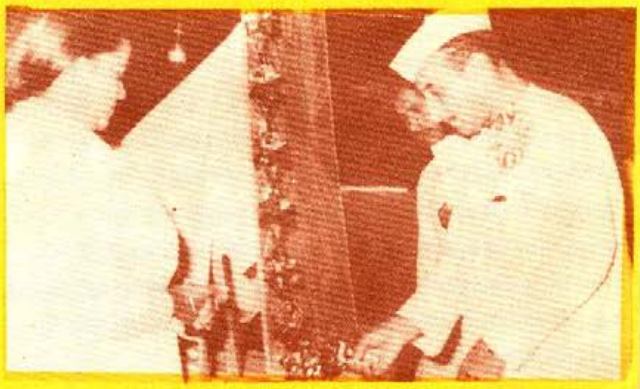

भूपाल में म० प्र० के वन एवं खेल और युवक कल्याण मन्त्री भ्राता अजय मुश्रान चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए।

करनाटक के मुख्य मन्त्री भ्राता गुण्डूराव को हुबली में "सर्व आत्माओं का चित्र" भेंट करते हुये ब्र० कु० सुनन्दा तथा निर्मला जी।

Regd. No. D (E) 70

किशमु (कीन्या) में राजयोग सेवा केन्द्र के लिये 'ओमशान्ति' भवन का उद्घाटन प्रान्तीय आयुक्त भ्राता फ्रान्सिस चेरोगोनी द्वारा सम्पन्न हुआ। चित्र में उनके बाएं ओर ब्र० कु० वेदान्ती जी बैठी हैं।

जालन्धर में नव विश्व आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में मंच पर बैठे हैं। ब्र० कु० राज, ब्र० कु० चन्द्रमणि, भ्राता रामलाल चिट्ठी चेयरमैन पंजाब भवन विकास निगम, ब्र० कु० रेवादास, एव आनन्द कुमार।

आबू पर्वत पर स्थित अन्तर्राष्ट्रीय राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र में बम्बई-बोरीवली सेवा केन्द्र द्वारा प्रषित शिविरार्थियों का एक ग्रुप, दादी प्रकाश-मणि, ब्र० कु० दीदी मनमोहिनी, शीलु बहन, शशी बहन और ब्र० कु० दिव्य प्रभा के साथ।

बारबाडोज में "फ़ेस्टीवल आफ़ अन्डरस्टैन्डिग डीवल्पमैट" के अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं सर्केनन सिहोन गुडरिज, प्रिन्सीपल, डा. एल. होयते, दादी जानकी जी, ब्र. कु. मोहिनी जी तथा कारसन स्माल। श्रोता गण बड़े ध्यान से सुनते हुए।

अमृत–सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	अन्तर्मुखी सदा सुखी	१	१३.	हे संगमयुगी ब्राह्मण (कविता)	१८
२.	संघर्ष और उत्कर्ष (सम्पादकीय)	२	१४.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (सचित्र)	१९
३.	प्रभाव	४	१५.	सच्चा धन	२१
४.	बिन्दी की कमाल (कविता)	६	१६.	हर कर्म सत्यं-शिवं-सुन्दरं भी होना चाहिए (कविता)	२२
५.	दिव्य शस्त्र	७	१७.	भावना विवेक का सन्तुलन (एक सम्वाद)	२३
६.	गीत	९	१८.	सद्ज्ञान दान देने 'बाबा' तब भारत भू पर आता है	२४
७.	अच्छाई की दुहाई और बुरी कमाई	१०	१९.	अफ़साना	२५
८.	प्रेरणा के अक्षय स्त्रोत ये जगमगाते दीप	११	२०.	योगी और भय	२७
९.	स्वर गूंजे भारत के नव-निर्माण के (कविता)	१२	२१.	क्लास के लिए प्रश्न	२८
१०.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में)	१३	२२.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९
११.	उभरती शक्तियाँ—ब्रह्माकुमारियां	१५			
१२.	विश्व एकता	१७			

अन्तर्मुखी सदा सुखी

सर्व गुणों का मूल आधार है अन्तर्मुखता। अन्तर्मुखता का यह अर्थ नहीं कि मुख से कुछ न बोलें, परन्तु अन्दर जो व्यर्थ संकल्पों के तूफ़ान आ जाते हैं उसमें अन्तर्मुख। अन्तर्मुखता की परिभाषा क्या है? मुख कहते हैं मुखड़े को, मुखड़े में ये चार शक्तियां हैं—सोचने की, देखने की, बोलने और सुनने की। यह मुख, सारे अंदर का भाव बताता है। आत्मिक स्थिति में स्थित हो कर इन शक्तियों को प्रयोग करें, इसको कहते हैं अन्तर्मुख। जैसे गुलाम मालिक की आज्ञा मानता है, गुलाम गुलाम की आज्ञा नहीं मानेगा, ठीक इसी प्रकार आत्मा अपनी आत्मिक स्थिति में स्थित हो कर अपनी कर्मेन्द्रियों को आर्डर करे तो ठीक काम होगा। ऐसे नहीं सोचने की शक्ति समर्थ की बजाए व्यर्थ सोच ले, इसके लिए अपने ऊपर नियन्त्रण चाहिए। नियन्त्रण शक्ति उनमें होगी जो सीट पर सेट होंगे। सीट है अन्तर्मुखता, इसलिए कहा जाता है अन्तर्मुखी सदा सुखी, बाह्यमुखी सदा दुःखी।

कोई कहते हमको खुशी नहीं, अन्दर-अन्दर सन्नाटा है, अब वह दुःख ऐसा भी नहीं जो 'हाय' करे। जैसे एक होते हैं मोटे विकार दूसरे उसके बाल-बच्चे; तो दुःख का भी महीन रूप है—न तो शिव बाबा की याद न माया का रूप—वास्तव में यह स्टेज भी सूक्ष्म दुःख की है। अगर कोई सूक्ष्म कर्मेन्द्रिय धोखा देती है तो धोखा खाने वाला सदा दुःखी। अन्तर्मुखी सदा खुश रहेगा, उसको मायावी तूफ़ानों की कोई परवाह नहीं, सदा हर्षित। जैसे सागर में लहरें उठती रहती हैं वैसे ही अन्तर्मुखी के अन्दर भी सदा खुशी की लहरें उठती रहती हैं। □

सम्पादकीय

संघर्ष और उत्कर्ष

इस कलियुगी संसार में जीवन के हर क्षेत्र में, हर वर्ग, व्यवसाय और आयु-भाग में संघर्ष ही देखने में आता है। एक मनुष्य व्यापार करने के लिए किसी चीज़ की दुकान खोलता है तो दूसरा भी उसकी चलती हुई दुकान देखकर और यह मानकर कि यह व्यवसाय लाभप्रद है, कहीं आस-पास उसी चीज़ की दुकान खोल लेता है और, इस प्रकार द्वन्द्व अथवा संघर्ष का वातावरण पैदा कर देता है। एक बालक किसी दूसरे बालक को मंच पर अच्छा भाषण करते सुनता है तो उसके माता-पिता अथवा उसका अपना मन उत्साहट पैदा करते हैं कि वह उससे भी अच्छा भाषण करे। इस प्रकार दोनों में एक प्रतिस्पर्धा-सी शुरू हो जाती है जो कई बार आगे जाकर द्वेष का रूप ले लेती है। कई बार तो ऐसा भी होता है कि एक व्यक्ति किसी दूसरे को मित्र-भाव से, सहानुभूति से, या किसी अच्छे लक्ष्य की पूर्ति के लिए कोई कला सिखाता है अथवा किसी कार्य में कुशल बनाता है तो वह व्यक्ति, उसी कला अथवा कौशल को लेकर, प्रथमोक्त व्यक्ति का सामना करने लगता है। इस प्रकार वह प्रतिद्वन्द्वी बन जाता है और एक कशमकश-सी पैदा कर देता है। एक व्यक्ति अन्य को राजनीति के क्षेत्र में ले आता है और उसे दिशा-निर्देश देता है परन्तु राजनीति में परिपक्व होने पर वह व्यक्ति अपने अभिभावक को भी पछाड़ कर सत्ता हथियाने की कोशिश करता है। संक्षेप में भाव यह है कि सारे वातावरण में ही संघर्ष और विरोध की भावना भरी हुई है। हां, कुछ थोड़े ही लोग संसार में ऐसे होते हैं जिनका मन दूसरों के प्रति सहानुभूति, करुणा, सहयोग, सेवा, सद्भावना और स्नेह से प्लावित हो उठता है, यहां तक कि वे अपने सर्वस्व की बाज़ी लगाकर भी दूसरे का हित करने से नहीं चूकते। वे त्याग के गुण से विशेषतया विभूषित होते हैं जो स्वार्थ को परोपकार के लिए अथवा अपने आराम को दूसरे की उन्नति के लिए सहज ही त्याग देते हैं। वे अपने प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिस्पर्धक अथवा विरोधी का भी अकल्याण करने की बात नहीं सोचते। परन्तु संसार में अधिकांश लोग तो ऐसे ही हैं जो ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ और सत्ता-लोलुप्य की भावना से उद्वहेलित होकर कशमकश का वातावरण बनाये रखते हैं।

आध्यात्मिक क्षेत्र में भी संघर्ष

आधुनिक युग का यह विश्लेषण केवल भौतिक जगत पर ही चरितार्थ नहीं होता बल्कि जब वह आध्यात्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करता है तब भी उसे ऐसी कई मंज़िलें पार करनी पड़ती हैं। कोई ईर्ष्या-वश किसी की निन्दा करता है तो अन्य कोई द्वेष-वश मुख़ालफ़त अथवा विरोध। कोई प्रतिस्पर्धा करते-करते उसे पछाड़ने की सोचता है तो अन्य कोई अपनी ही महिमा अथवा प्रतिष्ठा के स्वार्थ से असहयोग, अथवा विरोध पर उतर आता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में संघर्ष को देखकर कुछ लोग यह सोचने लगते हैं कि हम तो समझते थे कि आध्यात्मिक मार्ग में संघर्ष का नाम भी नहीं होगा परन्तु संघर्ष तो यहां भी पीछा नहीं छोड़ता। इस प्रकार वे विचलित और व्याकुल हो उठते हैं परन्तु सोचने की बात है कि संघर्ष तो इस युग का मुख्य-चिह्न है। जिस क्षण से नवजात शिशु संसार की रोशनी में आता है, उसी क्षण से संघर्ष तो शुरू हो ही जाता है। जब वह स्वयं को एक नये वातावरण में, नये लोगों के बीच पाता है और स्वयं को भाषा अथवा वाक्-शक्ति से रहित और अंग शक्ति में सुकोमल एवं अदृढ़ पाता है तो कुछ संघर्ष के बाद ही वह यहाँ के वायुमण्डल में और सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के अनुकूल कर पाता है। फिर भी यह संघर्ष समाप्त थोड़े ही होता है? यदि देखा जाय तो खेल-कूद आनन्ददायक हैं, आमोद-प्रमोद के साधन हैं और

विद्याध्ययन भी उत्सुकता, कौतूहल और दिलचस्पी का स्रोत है परन्तु यदि दूसरा दृष्टिकोण अपनाया जाए तो यह भी होड़, प्रतिस्पर्धा और परीक्षा, परिणाम-चिन्ता आदि के उत्पादक हैं। परन्तु वास्तविकता तो यह है कि यदि बच्चे के सामने प्रश्न, परीक्षाएँ और समस्याएँ न आयें, वह उन्हें हल करने का संघर्ष न करे तो उसका शारीरिक एवं बौद्धिक विकास ही नहीं हो सकता।

आध्यात्मिक जीवन में संघर्ष की उपयोगिता

इसी प्रकार, आध्यात्मिक जीवन में भी मनुष्य के सामने जो विकट परिस्थितियां या संघर्ष की जो घड़ियाँ आती हैं, उसके बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उत्कर्ष के लिए सहायक होती हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी करुणामूर्ति, त्याग मूर्ति, स्नेह-मूर्ति, राजयोगीजन होते हैं जो दूसरे को डूबता देखकर स्वयं मंझधार में कूद पड़ते हैं अथवा जो पर-हित के लिए मान-शान, सुख-साधन आदि का सहर्ष त्याग करते हैं, और इन सबसे भी ऊपर स्वयं करुणा के सागर, दया के भंडार, परम रक्षक एवं परम सहायक परमपिता परमात्मा का भी हाथ उन पर बना रहता है जो आध्यात्मिकता के पथ पर उसे अपना साथी बनाते हैं।

आध्यात्मिकता के मार्ग में संघर्ष से पार होने के प्रयत्न को ही 'पुरुषार्थ' कहा जाता है। पुरुषार्थी को चिन्ता इस बात की नहीं होती कि अन्य कोई उससे विरोध, द्वन्द्व अथवा संघर्ष का वातावरण पैदा करता है बल्कि उसकी कोशिश यह होती है कि वह स्वयं उस दलदल में न फँसे और यदि हो सके तो दूसरे को भी उससे निकाले। वह इस बात से व्याकुल नहीं होता कि दूसरा कोई उसका मुकाबला करता है अथवा उसकी निन्दा करके उसके व्यक्तित्व पर आघात पहुँचाता है बल्कि उसका प्रयत्न यह होता है कि उसका अपना मन स्थिर रहे, वाणी निर्मल बनी रहे और सद्भावना में अन्तर न आये। उसकी कोशिश यह होती है कि वातावरण प्रदूषित न हो और दूसरों को देखने या सुनने को बुराई न मिले बल्कि संसार में अच्छाई फैले, प्रीति बढ़े और सद्भावना से वातावरण सुगन्धित हो। वह सोचता है कि मर्यादा भंग न हो, अनुशासन न टूटे, पवित्रता पर अपवित्रता हावी न हो और आसुरी तत्वों को बढ़ावा न मिले बल्कि सदाचार, पवित्रता और सात्विकता की जयजयकार हो और वातावरण ऐसा बने कि जिसमें चहुँ ओर प्रसन्नता की लहर दौड़ उठे, सबके मन हर्ष से खिल उठें, सबमें भ्रातृत्व की भावना प्रधान हो और विश्व में प्राणी प्रेम से एक-दूसरे के निकट आयें। इस आदर्श लक्ष्य अथवा मनोरथ को लेकर वह जहाँ अपने पुरुषार्थ पथ पर सुदृढ़तापूर्वक चलता है, वहाँ वह निष्पक्ष रूप से समालोचक बनकर उसके सुधार की चेष्टा करता है तथा स्थिति-परिवर्तन के लिए प्रयत्नशील भी होता है। इस प्रकार के संघर्ष से सही पुरुषार्थी निश्चेष्ट नहीं होता और न निष्क्रियता को अपनाता है। परन्तु हाँ, यदि इस संघर्ष में वह देखता है कि परिस्थितियों का आक्रमण, विकटताओं का विस्फोट और द्वन्द्व, द्वेष, दुर्भावना और दुर्साधना की बाढ़ अत्यन्त प्रबल है तो वह अपनी योगचर्या, आध्यात्मिक निष्ठा एवं दिव्य गुणों के विकास के पुरुषार्थ को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए कुछ समय के लिए स्वयं को एक ओर सुरक्षित कर लेता है।

—जगदीश

पवित्रता

वास्तव में पवित्रता भी ज्ञान-सहित होनी चाहिये। जिसका हृदय ज्ञान सहित पवित्र है, उसमें नित्य ज्ञान-अग्नि जगती है और यदि कोई विकार आता है तो भस्म हो जाता है। अगर किसी में ज्ञानाग्न नहीं है तो उसमें धीरे-धीरे विकार प्रवेश होते रहेंगे और उसका हृदय मैला हो जायेगा। अतः ज्ञान-सहित पवित्रता द्वारा ही अवस्था सम्पूर्ण बन सकती है।

"प्र भा व"

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

सृष्टि क्रम, आत्मा परमात्मा व प्रकृति के पारस्परिक सम्बन्ध से चलता है। यहाँ आत्मा का आत्मा पर भी प्रभाव पड़ता है और प्रकृति पर भी। जब आत्मा सतोप्रधान थी तो प्रकृति भी सतोप्रधान थी और जैसे-जैसे आत्मा का पतन हुआ प्रकृति भी सतो से रजो व रजो से तमो बन गई। और सृष्टि चक्र के अन्त तक जब आत्मा व प्रकृति दोनों ही पूर्ण रूपेण तमोप्रधान बन जाते हैं तब परमात्मा अपने प्रभाव से आत्माओं को पावन करते हैं और तत्पश्चात प्रकृति भी उसके प्रभाव में पावन बन जाती है और संसार स्वर्ग कहलाता है।

पहले हम आत्मा का आत्मा पर क्या प्रभाव होता है उसकी चर्चा करेंगे। यह प्रभाव श्रेष्ठ होने से तो लाभ ही लाभ है परन्तु यह कुप्रभाव हो जाए तो मनुष्य के पतन का भय हो जाता है। किसी भी आत्मा में जो भी बुराई या अच्छाई है, उनका प्रभाव उसके सम्पर्क में आने वाले मनुष्यों पर अवश्य पड़ता है। परन्तु दूसरों की अच्छाई को ग्रहण करना व बुराई से प्रभावित न होना—यह अपनी श्रेष्ठता होनी चाहिए। परन्तु कई बार दूसरों की अच्छाई से प्रभावित होकर, अच्छाई ग्रहण करने की बजाय मनुष्य उस व्यक्ति की ओर आकर्षित हो जाता है, जो गलत है।

परन्तु कई मनुष्यों की यह भी विशेषता होती है कि वे सदा ही निर्लिप्त सी स्थिति बनाये रखते हैं, वे अपने पर केवल परमपिता का ही प्रभाव आने देते हैं, अन्यात्माओं के प्रभाव से वे न्यारे ही रहते हैं। दूसरों की अच्छाइयों को देखकर उन्हें अच्छाई देने वाले की याद भी आती है और स्वयं में अच्छाई भरने की श्रेष्ठ प्रेरणा भी। और दूसरों की बुराई तो त्याज्य है ही।

प्रभाव अर्थात् पर···भाव। भावना वश दूसरों की ओर आकर्षित होना—जिससे अनेक नुकसान हैं जिनका हम यहाँ जिक्र करेंगे ताकि हम किसी के भी व्यर्थ प्रभाव से बच सकें।

वातावरण का प्रभाव—कई बार मनुष्य वातावरण से इतना प्रभावित हो जाता है कि वह ऐसा काम भी कर बैठता है जो उसकी इच्छा के विरुद्ध हो—और फिर उसे बहुत समय तक पछताते ही रहना पड़ता है। इसके अलावा कई बार मनुष्य नीरस या उदास वातावरण के प्रभाव में स्वयं भी बेचैन हो उठता है। परन्तु योग के अभ्यासी को याद रखना चाहिए कि वह अपनी स्थिति से वातावरण को बदल सकता है। अतः जब कहीं ऐसा विपरीत वातावरण हो तो अन्तर्मुखी हो, ईश्वरीय स्वमान में स्थित हो जाना चाहिए।

प्रभाव से लगाव—किसी आत्मा के गुणों से या विशेषताओं से या प्राकृतिक सौन्दर्य से हम प्रभावित होते हैं तो स्वाभाविक हमारे मन में उसके प्रति संकल्प चलने लगते हैं। हमारे दिल पर उसकी छाप लग जाती है और मन न चाहते भी उधर भागने लगता है या दूसरे शब्दों में कहें हमारा उससे लगाव हो जाता है।

लगाव से झुकाव—जिससे हमारा लगाव होने लगता उसके सम्बन्ध में ही संकल्प चलते रहते हैं—परिणामतः उस मन में शिव पिता की मधुर स्मृति ठहरती नहीं। सर्वशक्तिमान पिता की स्मृति के अभाव से आत्मा कमजोर बनती जाती है और कोई समस्या आती है तो उसका सामना करने की शक्ति की कमी से तनाव महसूस होता है।

झुकाव से मनमुटाव—जब आत्मा का झुकाव होने लगता है तो परस्पर मनमुटाव होता है। एक आत्मा के प्रभाव में अटकी आत्मा, परमात्मा के प्रभाव से वन्चित हो जाती है और अनेक आत्माओं की उसके प्रति घृणा हो जाती है—फलस्वरूप परस्पर मनमुटाव

हो जाता है।

मनमुटाव से अभाव—अब आपसी टकराव से योग टूट जाता है और जीवन रूपी गाड़ी उल्टी तरफ़ चलने लगती है जिससे आत्मा अपने में परमात्मा से शक्तियाँ तथा गुण भरने का अभाव महसूस करती है। परिणामतः संगम युग के अखुट खज़ाने तथा भविष्य प्रालब्ध की प्राप्ति से वंचित रह जाते।

प्रभावित होने वाला परमात्मा को मन का मीत नहीं बना सकता—

जिस मन पर किसी व्यक्ति, वस्तु वा वैभव का प्रभाव है उस विचलित मन में सच्चे मीत अर्थात् परमप्रिय शिव पिता की मधुर याद निवास नहीं कर सकती। वह मन परमानन्द की अनुभूति कभी नहीं कर सकता।

प्रभावित होने वाला विश्वजीत नहीं बन सकता—

दूसरों के प्रभाव में चलने वाले मनुष्य में स्वयं का स्वमान या अधिकारीपन समाप्त हो जाता है, उसमें अधीनता के संस्कार पड़ जाते हैं। फलस्वरूप उसका भविष्य भी साधारण ही रह जाता है। ऐसा मनुष्य विश्व-महाराजन बनने के स्वप्न भी नहीं देख सकता।

प्रभावित होने वाला सर्व का हित नहीं कर सकता—

किसी आत्मा से प्रभावित होने वाले का ध्यान सर्व के हित से सिमट कर एक में ही चला जाता है, जिससे उसके भविष्य भाग्य में भी कमी आती है और वह दूसरों को श्रेष्ठ भाग्यशाली बनाने में मदद नहीं कर सकता।

प्रभावित होने वाला सदा हर्षित नहीं रह सकता—

जब आत्मा हद के व्यक्ति तथा वैभवों के तरफ आकर्षित होकर बेहद के प्राप्तियों की आश रखता वह सदा हर्षित नहीं रह सकता क्योंकि हद के व्यक्ति या साधन बेहद की प्राप्ति नहीं करा सकते, फलस्वरूप उसका मन उदास अथवा अशान्त होने लगता।

प्रभावित होने वाला उड़ता पंछी नहीं बन सकता—

प्रभावित होने वाली आत्मा स्वतन्त्रता को खोकर पिंजरे का पंछी बन जाती। क्योंकि उसका बुद्धि योग किसी व्यक्ति या वस्तु रूपी पिंजरे में अटका रहता है और वह अपनी बुद्धि को स्वतन्त्र रखकर परमधाम की ओर ऊँची उड़ान भरकर शिव बाबा की याद का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकता।

प्रभावित होने वाला कर्मातीत नहीं बन सकता—

जब आत्मा किसी से प्रभावित होती है तो स्वतः ही उसके प्रति व्यर्थ संकल्प चलने लगते, व्यर्थ वाचा का प्रयोग होने लगता जिससे व्यर्थ का हिसाब-किताब बनता है, फलस्वरूप कर्मातीत नहीं बन सकती।

प्रभावित होने वाला धोखा खा सकता—

किसी भी व्यक्ति या वस्तु के प्रभाव में आकर उन्हीं के आधार पर पुरुषार्थ करने वाली आत्माएँ धोखा खाती हैं। क्योंकि ये अल्पकाल के विनाशी सहारे एक दिन खत्म होने वाले ही हैं। एक शिव पिता ही अविनाशी सहारा है जो अन्त तक साथ निभाता है। बाकी सब धोखेबाज हैं।

प्रभावित क्यों ?

★ **आत्म-विश्वास की कमी से—**

जिसमें आत्म-विश्वास (Self Confidence) की कमी होगी वह दूसरों से शीघ्र प्रभावित होते हैं। और सदा किसी न किसी को अपने जीवन का आधार बनाते हैं।

★ **निर्णय शक्ति की कमी से—**

जिन आत्माओं के पास निर्णय शक्ति नहीं होती है वे सदा कार्य व्यवहार में अन्य आत्माओं से मदद की चाहना रखते हैं। समयानुसार राय या सलाह मिलने से उनके ऊपर प्रभावित होते हैं। ऐसी आत्माएँ सदा स्वयं को निर्बल महसूस करती हैं।

★ **रचयिता (Creator) को भूलने से—**

किसी आत्मा के गुणों को, विशेषताओं को अथवा शारीरिक सौन्दर्य को देखकर मन प्रभावित होता है और न चाहते भी उन आत्माओं के गुणों का या विशेषताओं का वर्णन करते रहते हैं। लेकिन किसी ने ठीक ही कहा है—

"जिसकी रचना इतनी सुन्दर है
वह कितना सुन्दर होगा।"

अगर किसी की तरफ मन आकर्षित होता है,

तो पहले हम ये सोचें कि इन आत्माओं में ऐसी विशेषताएँ या गुण भरने वाला कौन ? इनका रचयिता कौन ? क्यों न हम रचना के बदले रचयिता के ही गुण गान करें। लेकिन रचयिता को भूलने से ही रचना के प्रभाव में आते हैं।

सच्चा योगी एक परमात्मा से ही प्रभावित—

उपरोक्त विवरण का निवारण यही है कि हम सदा जो सच्चा अविनाशी मीत है, सच्चा सहारा है, सदा सुख देने वाला है उस प्यारे प्रियतम के ही प्रभाव में रहकर आत्मा को भरपूर करें। क्योंकि—

जो होगा एक परमात्मा से प्रभावित।
उसकी ही रहेगी सदा शिव से प्रीत॥
वो ही निभा सकेगा संगम की रीत।
उसका ही गायेंगे सभी मन से गीत॥

□

"बिन्दी की कमाल"

ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली

बिन्दी करे कमाल, सारी वाह-वाह बिन्दी की।
बिन्दी चमकादे भाल, है बड़ी सराहना बिन्दी की॥

जब भी लगे संकल्पों की क्यूँ,
अड़ने लगे माया, ख्वामखाह ही यूँ,
तुरन्त बन जाओ बिन्दी,
फुलस्टाप का पार्ट करे बिन्दी,

क्यूँ ? क्या ? कैसे का न रहे पता रत्ती भी।
सारी वाह-वाह बिन्दी की॥

जग विरुद्ध, मार्ग अवरुद्ध,
मन क्षुब्ध, हालात क्रुद्ध,
हो जा चमकीली बिन्दी,
भूल देह, बन जा बिन्दी,

हो जाएगो स्थिति शान्त—
दुःखों की न रहेगी चिन्दी भी।
सारी वाह-वाह बिन्दी की॥

तू बड़ा व्यापारी, तू बड़ा जवाहरी,
तेरी बड़ी कमाई, तेरी बड़ी होशियारी,
उतनी तेरी बढ़े राजाई,
जितनी बार तूने बिन्दी लगाई;
उतने नम्बर बढ़ते जाते,
यही कमाल बिन्दी की।
सारी वाह-वाह बिन्दी की॥

तू भी बिन्दी, तेरा बाबा भी बिन्दी,
तेरा सौभाग्य बिन्दी, भूलना न भूलकर भी;
कौड़ी से हीरा यही बनाए,
जीरो से हीरो यही बनाए,
चूक न होवे इत्ती सी।
सारी वाह-वाह बिन्दी की॥

बिन्दी हमारा फोन नम्बर,
औ यही हमारे उसका भी नम्बर,
मिलेगा जब सुबह के चार बजेंगे,
दुनिया के सारे तार कटेंगे,
फिर हम और हमारा बाबा,
शेष जग से हो जाए टा-टा,
बस बसे बुद्धि में केवल बिन्दी ही।
सारी वाह-वाह बिन्दी की॥

करे बिन्दी माया का बिस्तर गोल,
समक्ष इसके बन्द होते सारे बोल,
बिन्दी योग की अगन तपाए,
बिन्दी सारे विकर्म जलाए;
आएँ शक्तियाँ अष्ट—
हो जब इसकी स्मृति ही।
सारी वाह-वाह बिन्दी की॥

●

दिव्य शस्त्र

[ब्र० कु० सुन्दरी, मालवीय नगर, नई दिल्ली]

महाभारत में वृत्तान्त है कि पाण्डवों ने शिव से और देवताओं से अनेक दिव्य शस्त्र प्राप्त किये थे। जो कि उनकी विजय के आधार बने थे। वे दिव्य शस्त्र क्या थे और क्या हम भी उन्हें प्राप्त कर सकते हैं? इस पर हम चिन्तन करेंगे। प्रसिद्ध है कि ये दिव्य शस्त्र उन्होंने तपस्या से प्राप्त किये थे। अब पुरुषोत्तम संगम युग पर परमात्मा शिव स्वयं हमें दिव्य शस्त्र प्राप्त करने की विधि बताते हैं। उसका ही उल्लेख हम यहाँ करेंगे।

आध्यात्मिकता की सर्व श्रेष्ठ शक्ति है—शान्ति की शक्ति, (Silence Power) और इसे प्राप्त करने की यथार्थ विधि है—एकाग्रता (Concentration)। ये दोनों ही दिव्य शस्त्र भी हैं। जिनके द्वारा इस धरती पर स्वर्ग-स्थापना का कार्य और मायावी शक्तियों का संहार सफ़ल रूप से किया जा सकता है। जैसे विज्ञान द्वारा एक स्थान पर बैठे हुए, बटन दबाकर ही भीषण संहार किया जा सकता है, वैसे ही इन दिव्य शस्त्रों द्वारा एक स्थान पर बैठे हुए ही संकल्प रूपी बटन दबाकर, आसुरी शक्तियों का संहार किया जा सकता है।

शान्ति की शक्ति क्या है?

एक बार हमने एक धुरन्धर विद्वान से प्रश्न किया कि मन में सतत संकल्पों का प्रवाह क्यों चल रहा है? विदुषक ने इस पर कभी सोचा भी न था। इसका सम्पूर्ण उत्तर केवल परमशिक्षक परमात्मा शिव ने ही बताया है। "आत्मा में उसके सम्पूर्ण जन्मों का पार्ट भरा हुआ है"—वह पार्ट संकल्प रूप में सतत प्रकट होता रहता है। इसलिए संकल्प को कभी समाप्त नहीं किया जा सकता। निर्विकल्प समाधि में भी समाधिस्थ होने से पूर्व का अन्तिम संकल्प बना ही रहता है।

मन में यह संकल्पों का प्रवाह कभी तीव्र गति से और कभी मन्द गति से चलता है। और यह जानने योग्य विषय है कि मनुष्य की सारी शक्ति संकल्प रूप में ही व्यय होती है। इस प्रकार आत्मा की शक्ति सतत निकलती रहती है। अगर मन में व्यर्थ संकल्प उठ रहे हैं तो संकल्पों की गति तीव्र हो जाती है और अगर मन में यथार्थ या शक्तिशाली संकल्प उठ रहे हैं तो संकल्प गति धीमी हो जाती है।

इस प्रकार अगर संकल्प गति को इतना धीमा कर दिया जाए कि हमें यह आभास होने लगे कि मन पूर्णतया शान्त हो गया है तो यही स्थिति परम शान्ति की स्थिति है और क्योंकि उसमें संकल्प प्रवाह अति कम हो जाता है, अतः संकल्प शक्ति संग्रहित हो जाती है। इसे ही शान्ति की शक्ति कहा जाता है।

संकल्प शक्ति अति महान है। कोई भी महान कार्य करने से पूर्व किसी के भी मन में पहले संकल्प ही उठता है। अगर संकल्प शक्तिहीन होगा तो कार्य भी शक्तिशाली नहीं होगा। तो अगर संकल्प की गति को रोककर एकाग्रता का आभास किया जाए तो वह संकल्प-शक्ति अर्थात् Silence Power, अनेक चमत्कारिक कार्य कर सकती है।

संकल्प-गति को धीमा कैसे करें?

कमज़ोर मन में संकल्प प्रवाह तीव्र गति से होता है और शक्तिशाली मन में धीमी गति से। जैसे कमज़ोर मन वाला व्यक्ति अगर शेर को देखे तो उसके मन में संकल्प बेरोक गति से दौड़ेंगे। जबकि शक्तिशाली मन वाले के साथ ऐसा नहीं होगा। अतः कमज़ोर मन को ज्ञान-बल द्वारा शक्तिशाली बनाना चाहिए। अर्थात् मन को ज्ञान-मनन में लगाने का अभ्यास डाले तो मन में संकल्प-प्रवाह धीमा होता जाएगा और मन शक्तिशाली बन जाएगा।

बुद्धि ही मन का नियन्त्रक है। अगर बुद्धि शक्तिशाली होगी तो मन की गति को रोक सकेगी। अतः बुद्धि को शक्तिशाली करने के लिए बुद्धि को सर्व-

शक्तिवान से जोड़ना आवश्यक है। बुद्धि को सर्व-शक्तिवान से लगाने से बुद्धि व सर्वशक्तिवान के मध्य शक्ति सम्पर्क हो जाएगा। और सर्वशक्तिवान से शक्ति का प्रवाह बुद्धि में करंट (current) की तरह आयेगा और बुद्धि शक्तिशाली होती जाएगी।

दिनचर्या पर ध्यान—

मन की गति को धीमा करने के लिए हमें अपनी दिनचर्या में कुछ मुख्य बातों पर ध्यान देना होगा।

● मन सदा ही किसी के प्रभाव के वश चलता है। अगर हम ध्यान दें तो पाएँगे कि आँख खुलते ही मन में पहला संकल्प किसी प्रभाव वश उठा। अगर हम उस प्रभाव को वहीं समाप्त कर दें तो उस संकल्प का विस्तार बरगद के पेड़ की तरह नहीं होगा और अगर हमने उस संकल्प पर ध्यान नहीं दिया तो उसके पीछे अनेक संकल्पों का प्रवाह शुरू हो जाएगा। इसलिए परम शिक्षक ने सर्वप्रथम यही विधि बताई कि पहला संकल्प यही हो कि "मैं आत्मा हूँ।" इस संकल्प से अन्य सभी प्रभाव समाप्त हो जायेंगे।

● अमृत वेले के इस प्रथम संकल्प का आधार हमारी सोने के समय की स्थिति पर है और सोते समय हमारे मन में पूरे दिन में घटी घटनाओं का प्रभाव होता है। अतः अच्छे पुरुषार्थी को चाहिए कि वह उस प्रभाव को पूर्णतया समाप्त करके, मन को पूर्ण रूपेण योग-युक्त करके सोये। उसके लिए शिव-बाबा ने विधि समझाई है कि अपना सारे दिन का हाल-चाल शिव-बाबा को सुनाओ और अगर कोई भूल हुई हो तो बाबा से क्षमा लो ताकि नया दिन हमारे लिए पूर्णतया नया हो, नये विचार हों, पुराना प्रभाव मन पर न हो। और यह पुरुषार्थियों का अनुभव है कि ऐसा करने से मन स्वच्छ व हल्का हो जाता है।

● परन्तु ऐसा करने पर भी यदि मन पर पिछले दिन का प्रभाव रह जाये तो इसकी समाप्ति का साधन है—प्रति दिन की ईश्वरीय ज्ञान मुरली सुनना। ईश्वरीय ज्ञान का बल, मुरली द्वारा मिले संकल्प पुराने संकल्पों को समाप्त कर देंगे।

● इसके अतिरिक्त सारा दिन व्यर्थ चिन्तन या व्यर्थ वाचा में अपनी शक्ति को व्यर्थ न करें। इससे बचने के लिए परम पिता ने हमें सिखाया है कि प्रति दिन अपने मन को कुछ काम दो ताकि मन सारा दिन उस कार्य के चारों ओर ही सीमित रहे। वह कार्य कैसा हो? जैसे—

● आज मैं सारा दिन सबको आत्मिक दृष्टि से ही देखूँगा।

● आज मैं सारा दिन इस खेल को साक्षी होकर देखूँगा।

● या आज मैं इस विशेष नशे में रहूँगा। ईश्वरीय नशा संकल्प-गति को धीमा रखता है। जैसे स्थूल नशे से भी मन शान्त हो जाता है। वैसे ही ईश्वरीय नशा इस परम शान्ति का उत्तम साधन है।

इस तरह दिन-चर्या पर ध्यान देने से मन की गति शान्त रहेगी और शान्ति की शक्ति बढ़ती जाएगी।

साथ ही साथ सारे दिन में जब मन में संकल्प प्रवाह तीव्र हो तो उसे रोकने के लिए बीच-बीच में अशरीरीपन का अभ्यास करना चाहिए तो संकल्प गति में पुनः श्रेष्ठ मोड़ आ जाएगा।

इस तरह एक बहुत बड़ी शक्ति हम संग्रहित कर सकते हैं और तब ही इस आध्यात्मिक जीवन का वास्तविक सुख हमें प्राप्त होगा। अगर हम यों ही अलबेलेपन में ध्यान नहीं रखते तो एक बहुत बड़ी प्राप्ति से हमें वंचित रहना होगा।

मन की गति को धीमा करने के लिए कुछ धारणाएँ—

● मन को फौरन उत्तेजित होने का स्वभाव न हो। हर बात में हम धैर्यता अपनाएँ। धैर्यता से सुनें, धैर्यता से सोचें तथा धैर्यता से उत्तर दें।

● हमारी वाचा भी धैर्यवत हो। अगर सम्पूर्ण ज्ञानी होने के बाद अपनी वाचा पर भी अधिकार न कर सके तो संकल्प पर अधिकार करना स्वप्न बनकर ही रह जाएगा।

● अपनी दिनचर्या में स्वयं ही स्वयं को बचाकर रक्खें।

● संकल्पों के महत्व व संकल्प की शक्ति को जानें।

● वास्तव में सारा ईश्वरीय ज्ञान ही निसंकल्प होने के लिए है। अगर मन में संकल्पों का तूफ़ान चलता है तो समझना चाहिए कि अभी तक ज्ञान को गुह्यता से नहीं समझा है।

● अनुमान का पूर्णतया त्याग करना होगा।

एकाग्रता—

मन की है शांति की शक्ति (Silence Power) और बुद्धि की है एकाग्रता-शक्ति। मन की शक्ति मन की एकाग्रता से बढ़ती है। और बुद्धि की एकाग्रता से बुद्धि शक्तिशाली बनती है। मन का एक संकल्प में स्थित होना एकग्रता है। और बुद्धि का शिव बाबा के स्वरूप पर स्थित होना एकाग्रता है। बुद्धि की एकाग्रता में बुद्धि का कार्य एक दिव्य नेत्र-रूप से होता है। यद्यपि एकाग्रता अभ्यास से बढ़ती है तथापि एकाग्रचित्त या स्थिर-बुद्धि होने के लिए कुछ विशेष बातों पर ध्यान देना जरूरी है। स्थिर बुद्धि होने से बुद्धि बहुत दिव्य हो जाती है। और वास्तव में ज्ञानी आत्मा या बुद्धिमान आत्मा वही है जो अपनी बुद्धि को स्थिर कर सके।

स्थिर बुद्धि के लिए—

● सम्पूर्ण सात्विक भोजन करने वाला ही स्थिर बुद्धि हो सकती है।

● जिसे विश्व के सभी व्यक्तियों या वैभवों से पूर्ण वैराग्य हो, वही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

● जिसे कर्म में कर्त्तापन का भान नहीं, वह ही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

● जिसने अपनी सम्पूर्ण तृष्णाओं का त्याग कर दिया हो, वह ही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

● ज्ञान के बल द्वारा अडोल स्थिति वाला ही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

● सम्पूर्ण पवित्रता वाला ही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

● आत्मा व परमात्मा की शक्तियों को महीनता से जानने वाला ही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

● निश्चिन्त व निर्भय व्यक्ति ही स्थिर बुद्धि हो सकता है।

इस प्रकार शान्ति की शक्ति व एकाग्रता—ये दो दिव्य शस्त्र प्राप्त करके महान आत्माएँ भीषण मायावी शक्तियों से विश्व को मुक्त कर सकती हैं। **इन शक्तियों को बढ़ाने के लिए एकान्तवासी बन स्वचिन्तन करना, व स्वयं को कहीं भी न उलझाना परमावश्यक है।** ●

गीत

(ब्र० कु० मोहन, अमृतसर)

पवित्रता अपनाओ, सर्वसुख तुम पाओ।
शिव पिता का यह सन्देशा, जन-जन तक पहुँचाओ॥
पवित्रता अपनाओ·····

सर्व गुणों की यह है जननी, सबको करे निहाल।
इसके आते ही मिट जाते, जन्मों के जंजाल॥
पवित्रता के बल से जग में, सुन्दर स्वर्ग सजाओ।
पवित्रता अपनाओ·····

भरा हुआ पवित्रता में, शान्ति का खजाना।
परमपिता ने यही कहा है, पवित्र बनना, बनाना॥
इस मार्ग पे खुद चलो तुम, औरों को चलाओ।
पवित्रता अपनाओ·····

कदम-कदम में पद्म है उसके, पावन जो बन जाता।
खुशियां उसके पांव चूमे, रहे सदा मुस्काता॥
पवित्रता की चमक से अब तो, हर मन को चमकाओ।
पवित्रता अपनाओ·····

●

अच्छाई की दुहाई और बुरी कमाई

ब्र० कु० चक्रधारी, बेहली

प्यारे बच्चो, मैंने बचपन में एक कहानी पढ़ी थी जिस पर विचार करने से आज मुझे लगता है कि वह एक आध्यात्मिक अर्थ की अभिव्यञ्जना करती है।

कहानी इस प्रकार है—एक मछियारा एक नदी के तट पर बैठकर मछलियाँ पकड़ा करता था। वह नदी में कांटा डाल देता और मछली खाने की लालसा में उसमें पकड़ी जाती। मछियारा उसे खेंच लेता और मछली तड़प-तड़पकर मर जाती। मछियारे का मन पत्थर की तरह भावना-शून्य हो गया था; दया की एक बूंद भी उसमें न रही थी। अपना पेट भरने के लिए वह कितनी मछलियों का पेट काटता था और अपनी तृप्ति के लिए न जाने कितनों को तड़पाता था। मनुष्य होकर भी वह मानव धर्म से नितान्त शून्य था।

मछलियों में यह आवाज़ फैल गई थी कि ऐसा एक मछियारा नदी में आकर प्रति दिन उनके संगी साथियों को पकड़ जाता है और उन्हें काल का ग्रास बना लेता है। इसलिए अब वे प्रायः उसके काँटे के निकट नहीं आती थीं बल्कि बचकर निकल जातीं। कोई-कोई मछली पानी से सिर बाहर निकाल, मछियारे की ओर देख, फिर डुबकी लगाकर भाग जाती मानो वे मछियारे को बताना चाहती हों कि अब वे उसकी चाल को भाँप गई हैं।

मछियारे को भी अब ऐसा आभास हो गया कि मछलियाँ अब उसके पेंतेड़ों से परिचित हो गई हैं। अतः उसने अब एक नई चाल चली। उसने संन्यासी के जैसे गेरुआ वस्त्र पहन लिए, एक हाथ में कमण्डल ले लिया, पाँव पर खड़ाऊँ धारण कर लिए, सिर पर जटाजूट लगा ली, दाड़ी, मूँछ बढ़ा ली और तिलक तथा भभूत लगाकर पहले स्थान से थोड़ा दूर बैठकर काँटा लटकाकर कहने लगा—"मछलियो, मैं तो प्रभु का उपासक हूँ और आपका शुभ-चिन्तक। आप मेरे पास आ जाओ; मैं आपको प्रभु के दर्शन कराऊँगा।"

कुछ मछलियाँ तो यह सुनकर तैयार हो गईं परन्तु दूसरों ने उन्हें रोका।

यह सब वार्त्तालाप उस नदी का एक मगरमच्छ भी सुन रहा था। उसने समझा कि मछियारा चालाकी कर रहा है और ये सब उसकी चाल को समझती नहीं। उसने कहा—"ठहरो, ठहरो, मछलियो, मैं तुम्हें एक युक्ति बताता हूँ। इस मछियारे से कह दो कि हम एक-एक करके नहीं बल्कि सब इकट्ठी ही प्रभु-दर्शन करना चाहती हैं। और कि यदि तब मछियारा एक बहुत बड़ी बाल्टी ले आये तो काफ़ी सारी मछलियाँ इकट्ठी हो उसके साथ चलेंगी।"

मछलियों ने वेष-धारी संन्यासी अर्थात् मछियारे से ऐसे ही कहा और मछियारे ने उनकी यह बात स्वीकार कर ली। उसने सोचा होगा कि यदि एक दिन रुकने से बहुत सारी मछलियाँ इकट्ठी मिल सकती हैं तो इसमें हर्ज ही क्या है?

मछियारा दूसरे दिन एक काफ़ी बड़ा डोल लिये हुए नदी के तट पर आ पहुँचा और ऊँची आवाज़ में कहने लगा—"मछलियो, मैं आ गया हूँ। अब आप तैयार हो जाओ ताकि मैं आप सबको प्रभु-दर्शन करा दूँ।"

इस बात को मगरमच्छ भी सुन रहा था। जैसे ही मछियारा डोल लेकर पानी में उतरा, वैसे ही मगरमच्छ ने उसकी टाँग पकड़ ली। मछियारे को लगा कि उसका एक पाँव कुछ भारी-भारी-सा हो

गया है। शीघ्र ही उसे समझ में आ गया कि मगरमच्छ ने उसे अपने मुँह में ले लिया है। उसने मगरमच्छ को कहा—"मैंने आपका क्या बिगाड़ा था जो आपने मुझे पकड़ लिया है ?"

मगरमच्छ ने कहा—"अभी आपके आने से थोड़ा ही पहले यहाँ यमराज आये थे और उन्होंने आज्ञा की थी कि आपको शीघ्र ही उनके पास भेज दिया जाए ताकि वह आपको प्रभु-दर्शन करा दें। अतः अब आपको प्रभु-दर्शन होंगे और मेरा पेट भर जाएगा।"

यह सुनकर मछियारा काँप उठा। उसे थर्राते देखकर मछलियाँ हँस पड़ीं, मगरमच्छ को भी हँसी आ गई और उसका मुँह खुलने से मछयारे का पाँव छूट गया और वह वहाँ से बड़ी तेज़ी से भागा और बाहर निकल आया। इसके पश्चात् उसने कभी भी वहाँ मछलियों को पकड़ने की कोशिश नहीं की।

बच्चो, संसार में मछियारे की तरह बहुत-से मक्कार लोग भी हैं, स्वार्थी भी और परपीड़क भी। वे दूसरों को दुःख रूपी काँटे चुभोते रहते हैं। दूसरों की जान लेकर वे खुश होते हैं। अपना पेट भरने के लिए दूसरों की हिंसा करना अथवा उन्हें दुःख देना, यह उन्हें नहीं अखरता। वर्षों भर झूठ का धन्धा और दुःखदायक कर्म करने के बाद भी वे अपने अन्तरात्मा की आवाज़ नहीं सुनते। या तो उनकी वह आवाज़ ही ऐसी दब चुकी होती है कि सुनाई ही नहीं देती। इस भवसागर में जो मनुष्य रूपी मछलियाँ हैं, उनको वे लालच, चकमा अथवा प्रलोभन के काँटे से अपना स्वार्थ का शिकार बनाये रहते हैं और वे भी अपने भोलेपन के कारण ऐसे लोगों के चंगुल में आ जाते हैं। जब लोगों को इनके हथकंडों का पता लग जाता है, तब वे नये पैंतेड़े अपनाते हैं, यहाँ तक कि साधु-वेष भी धारण कर लेते हैं और परलोक, परमार्थ आदि की हाय-दुहाई देते हैं। पवित्रता के पद से पतित ये लोग प्रभु-दर्शन तक की बात भी कहते हैं यद्यपि इनका अपना जीवन सदाचार दर्शन के अनुकूल नहीं होता। ये लोग केवल काल रूपी मगरमच्छ ही से डरते हैं। जब वह आकर इनको दबोचने लगता है, तब ये स्वयं भी प्रभु-दर्शन से घबराते हैं। ये बाहर से अपना रूप और अपना वेष बदलने से भी नहीं चूकते। स्वयं को साधु बताकर भी ये असाधु कर्म करने को उद्यत होते हैं।

बच्चो, निश्चय ही आपको उस मछियारे के कर्म अच्छे नहीं लगते होंगे जो कि अपनी उदर पूर्ति के लिए कइयों का जान लेवा बना। मनुष्य की बुराई का एक न एक दिन सबको पता तो लग ही जाता है; इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह धोखाधड़ी का कर्म छोड़ दे और परहित को सामने रखकर ही व्यवहार, व्यापार एवं आचार की नीति अपनाये।

प्रेरणा के अक्षय स्त्रोत ये जगमगाते दीप !

लेखिका—ब्र० कु० सीता, कोसीकलां

अन्धकार कितना ही गहन और निबिड़ क्यों न हो लेकिन छोटे से दीपक में उससे जूझने और उसे पराजित करने का हौसला इससे अधिक होता है। दुख चाहे जितना अधिक हो लेकिन मन में उससे जूझने का हौसला उससे अधिक ही रहना चाहिये। जैसे दीपक के प्रकाश के आगे अन्धकार टिक नहीं पाता। वैसे ही मज़बूत इरादों के आगे दुख और असफ़लता नहीं टिक पाती।

दीपक की काया देखने में कितनी साधारण है, उसकी बाती भी कितनी पतली है लेकिन उसका संकल्प कितना महान् और ऊंचा है। वह स्वयं जल उठेगा लेकिन औरों को प्रकाशित ही करेगा। खुद को मिटाकर औरों को आलोक का दान देगा। शायद इसीलिये लोग उसकी पूजा अर्चना करते हैं। हम में भी जो स्वयं को जलाकर, मिटाकर औरों की सेवा करते हैं, उन्हीं को महान् कहते हैं और उनकी महिमा मान्यता होती है।

स्वर गूँजे भारत के नव निर्माण के

[ब्र० कु० कृष्णदेव, शिमला]

सत्य धर्म के चरण पड़े हैं भारत भूमि पर भगवान के।
कल्प के बाद आज फिर स्वर गूँजे हैं भारत के नव-निर्माण के।।

धरती अपनी अम्बर अपना।
ज्ञान सूर्य सा हम सबको तपना।
श्रेष्ठ कर्म का मन्त्र जपना।
पूरा होगा तब सतयुग का सपना।

ज्ञान दीप रखने हैं घर-घर, प्रेम त्याग और सद् ज्ञान के।
कल्प के बाद आज फिर स्वर गूँजे भारत के नव-निर्माण के।।

शुद्ध संकल्पों ने ली अंगड़ाई।
जागी आत्मा ज्ञान की तरुणाई।
संगम की बेला आई।
झूम उठी आशा हम राई।

खुल गये नये भेद अब आत्म-ज्ञान और परमात्म ज्ञान के।
कल्प के बाद आज फिर स्वर गूँजे भारत के नव-निर्माण के।।

पुरुषार्थ का सौरभ उड़ता।
दूर हुई जीवन की जड़ता।
लेकर ज्ञान मशाल हाथ में।
मिला कदम से कदम साथ में।

पतित जब बंद कपाट खोलते अन्धकार और अज्ञान के।
कल्प के बाद आज फिर स्वर गूँजे भारत के नव-निर्माण के।।

ऊँच, नीच का रहा न अन्तर।
कथनी करनी एक बराबर।
एक पथ एक है मंजिल।
ब्रह्म लोक में बसता प्रभु अविकल।

खुल गये हैं नये भेद ज्ञान और विज्ञान के।
कल्प के बाद आज फिर स्वर गूँजे भारत के नव-निर्माण के।।

आदर्शों की फसल न सूखे।
रहे न जग में कोई भूखे।
समता का भाव सब में जागे।
गले लगाएँ सबको बढ़कर आगे।

ब्रह्माकुमार सदा अर्पित रहते हैं वही निकट भगवान के।
कल्प के बाद आज फिर स्वर गूँजे भारत के नव-निर्माण के।।

रुड़की में नगरपालिका हाल में लगाई चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदशनी के चित्रों की व्याख्या ब्र० कु० अनाता भ्राता रामसिंह यू. पी. विधान सभा के सदस्य को दे रही हैं।

बाड़मेर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन नगर पालिका के अध्यक्ष द्वारा सम्पन्न हुआ उन्हें ब्र० कु० फूल चित्रों की व्याख्या करते हुए।

झारसुगड़ा में "अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ प्रदर्शनी" का उद्घाटन एस.डी. एम. भ्राता ओ.डी. परीच्छा कर रहे हैं। ब्र० कु० जयन्ती, आशा, अंजू तथा अन्य भाई बहन साथ में हैं।

दशहरा अवसर पर बालसोर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन पी.सी. पटनायक ए.डी. एम. जी द्वारा सम्पन्न हुआ, उद्घाटन पश्चात् भाषण करते हुए। उनके दाएं ब्र० कु० सुशीला तथा बाएं चन्द्रमोहन जी बैठे हैं।

भण्डारा सेवा केन्द्र द्वारा एक मैटाडोर गाड़ी को चित्रों से सजाकर गांव-गांव में ईश्वरीय सन्देश दिया जा रहा है, चित्र में सजी गाड़ी के साथ शोभा यात्रा का दृश्य।

भुवनेश्वर सेवा केन्द्र की ओर से बी.जे.बी. कालेज के कम्पाऊंड में गीता पाठशाला के उद्घाटन समारोह पर ब्र० कु० अशोक जी धन्यवाद दे रहे हैं। मंच पर दाएं से ब्र० कु० मंजू, कुलदीप, निरुपमा तथा अंगूर उपस्थित हैं।

जालन्धर में हुए नव विश्व आध्यात्मिक मेले में मेजर जनरल भ्राता बी.एम. बोहरा चीफ आफ स्टाफ पधारे। ब्र० कु० कृष्णा उन्हें चित्रों की व्याख्या दे रही हैं।

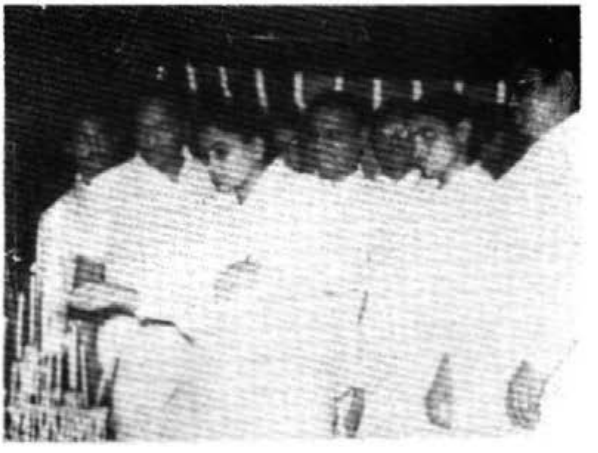

जालन्धर में चरणजीतपुरा में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन नगरपिता भ्राता धर्मवीर ने किया। उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० राज दीप प्रज्जवलित करते हुए।

ब्र० कु० शिवकन्या मद्रास में लाएन क्लब सौकारपेट में प्रवचन करती हुई। क्लब के पदाधिकारी चित्र में दिखाई दे रहे हैं।

हिसार में नए सेवा केन्द्र का उद्घाटन ब्र० कु० दीदी मनमोहनी जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

बंगाल के प्रसिद्ध दुर्गोत्सव के उपलक्ष पर बड़ा बाजार में चैतन्य दुर्गा की झांकी के मण्डप के उद्घाटन के पश्चात् प्रदेश कांग्रेस (ई) के कोषाध्यक्ष एवं विधायक भ्राता राजेश खेतान एवं ब्र० कु० विन्दु जी परमात्मा की मधुर याद में खड़े हैं।

"उभरती-शक्तियाँ"—ब्रह्माकुमारियाँ

लेखक—ब्र० कु० सूरज कुमार, मधुबन आबू

भूतल पर जब अन्धकार छा जाता है, प्राकृतिक वैभव मनुष्य के सुखों पर आघात करने लगते हैं, मानव चैन की श्वांस के लिए सत्यता की खोज में भटकने लगता है, तब सुदूर पूर्व में सबके मन को आकर्षित करती हुई एक अखण्ड ज्योति प्रकट होती है, जो सभी को सही दिशा प्रदान करती है।

धर्म व अध्यात्म का शिखर भारत जब अपने गौरव को पूर्णतया धूमिल कर देता है, तब ज्ञान सूर्य परमात्मा यहीं आकर मानव-मन को आलोकित करते हैं। जब वेद और वेदान्त, पुराण और दर्शन मानव मन को प्रसन्न नहीं कर पाते, अनेक गुरुओं का समूह भी मानव पतन को नहीं रोक पाता, तब भगवान स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर ब्रह्मा-वत्सों द्वारा पुनः विश्व में चेतनता जागृत करते हैं।

शास्त्रों में शिव-शक्तियों का वर्णन है जो शिव द्वारा प्रकट हुई थी और जिन्होंने शिव से शक्तियों का वरदान पाकर असुरों का संहार करके पृथ्वी का भार हल्का किया था। परन्तु वे शक्तियाँ किस काल में थी और उसके बाद सृष्टि का क्या हुआ—ये सदा शास्त्रवादियों की खोज का ही विषय रहा।

अब समय चक्र पुनरावृत्त होकर वहीं पहुँचा है जबकि पृथ्वी असुर भार से कराह उठी है। बोझिल पृथ्वी, मन को स्वच्छ अन्न व जल भी प्रदान नहीं कर रही है। इसी काल को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा है। अब से ठीक 5000 वर्ष पूर्व भी परमात्मा शिव ने भारत में आकर नारियों को शिव-शक्ति बनाकर विश्व का उत्थान कराया था। अब पुनः वही समय है जबकि परमात्मा शिव ने पुनः नारी को शक्ति-स्वरूप प्रदान किया है।

ब्रह्मा-कुमारियों ने असुरों को चुनौती दी है

ये प्रसिद्ध शिव-शक्तियाँ—ब्रह्माकुमारियाँ, जो शिव से योग-युक्त होकर शक्ति प्राप्त कर रही हैं, असुरों को पृथ्वी से पलायन के लिए बाध्य कर रही है। इन्होंने मायावी असुरों से लड़ने के लिए ज्ञान व योग के अनेक अस्त्र-शस्त्र तैयार किये हैं और दिव्य चक्षु-युक्त मनुष्य अच्छी तरह से देख रहे हैं कि असुर सेना भयभीत होकर पीछे हट रही है और शीघ्र ही पृथ्वी असुरों के प्रभाव से मुक्त हो जायेगी। अब समस्त विश्व पर असुर राज्य कर रहा है, शीघ्र ही ईश्वरीय राज्य मनुष्य के मन को दिव्यता प्रदान करेगा।

अनेक शास्त्र व विद्वान होते हुए भी धरती पर असुर साम्राज्य छा गया है। वे स्वयं भी असुरों की अधीनता स्वीकार कर चुके हैं। ऐसे घोर पाप के समय ब्रह्मा-वत्स, शिव-शक्तियाँ ही एक मात्र सहारा है जिनकी ओर समस्त विश्व की आँखें लगी हैं, जो विश्व में पुनः दैवी साम्राज्य की स्थापना करेंगी।

ब्रह्मा-वत्सों के पास अथाह बल है

कई साम्प्रदायिक नेता ब्रह्माकुमारियों के बढ़ते प्रवाह से व्याकुल हैं और वे इस प्रवाह को रोकना चाहते हैं परन्तु आज तक वे सभी असफल रहे हैं। उन्हें क्या पता कि ब्रह्मा-कुमारियों के पास सर्व श्रेष्ठ पवित्रता व योग का बल है, चरित्र का बल है। इनके पवित्रता व योग के बल से दूर से ही विरोधियों की विरोध भावना समाप्त हो जाती है। वास्तव में तो पवित्रता व योग की शक्ति, विज्ञान की सर्व शक्तियों से भी बढ़कर है। यह सत्य अब शीघ्र ही प्रदर्शित हो जाएगा। और वह दिन दूर नहीं जबकि ब्रह्मा-वत्सों की ईश्वरीय शक्ति के आगे विश्व की सभी शक्तियों को झुकना होगा।

इनके पीछे सर्वशक्तिवान है

ब्रह्मा-वत्सों के पीछे स्वयं भगवान है। ये उन्हीं की आज्ञानुसार अपना कार्य कर रही हैं। ईश्वरीय शक्ति के आगे भला आत्माओं की शक्ति कहाँ ठहरेगी। चाहे समस्त विश्व एक होकर, इनके बढ़ते

कदमों को रोकना चाहे, परन्तु उनके हाथ निराशा ही लगेगी। सर्वशक्तिवान के एक इशारे से ही, ब्रह्मा-वत्सों के आगे सभी असफल हो जाते हैं। जिन्होंने "काम" को जीत लिया हो, उन्हें भला कौन जीतेगा। और जो अपने मन से ही हार चुके हों, वे भला इन शक्तियों के आगे कहाँ टिकेंगे।

महाभारत-युद्ध इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि जहाँ स्वयं भगवान है, जीत वहीं है और मदमस्त कौरवों को गुरु व आचार्यों का साथ होते भी भगवान की शक्ति का एहसास नहीं होता।

सर्व शक्तिवान की छत्र-छाया में शिव-शक्तियाँ तीव्रगति से आगे बढ़ती जा रही हैं। कई इन्हें आगे बढ़ता देख आग-बबूला हो रहे हैं। कई इनके सामीप्य से परम शान्तिमय नवजीवन पा रहे हैं। कई इनका विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं और कई इनकी विशेषताओं का गान कर रहे हैं। मनुष्य को शायद पता नहीं कि जिनके ऊपर भगवान की छत्र-छाया हो, उन्हें आँधी तूफान भला कैसे रोकेंगे। इसलिए उन परम मित्रों से हमारा नम्र निवेदन है कि वे ईर्ष्या द्वेष की अग्नि से निकल कर सर्वशक्तिवान की शीतल छाया में आ जाएं।

ब्रह्मा-वत्सों के पास ज्ञान का बल है, त्याग का बल है।

भगवान के इन बच्चों के पास भगवान द्वारा दिये गये ज्ञान का विशाल बल है। शास्त्रों का पुराना ज्ञान इस ईश्वरीय ज्ञान के समक्ष बलहीन लगता है। ज्ञान के अस्त्रों-शस्त्रों से सजी ये शिव-शक्तियाँ विश्व को नव दिशा प्रदान कर रही हैं।

इनके त्याग का बल मनुष्यों को माया का त्याग करने के लिए प्रेरित कर रहा है। क्योंकि ये सभी एक ही परमपिता के बच्चे हैं। अतः इन जैसी संगठित शक्ति संसार में अन्यत्र नहीं है। त्याग के आगे तो सभी को झुकना पड़ता है।

ये विश्व में जलते दीपक हैं

इनका प्रकाश, विश्व के घने अन्धकार में, मनुष्यों को कुछ सिखा रहा है, कुछ दिखा रहा है। इनके प्रकाश से जग प्रकाशित है, नहीं तो अब तक विश्व वीरान बन गया होता। इनका दिव्य प्रकाश विश्व के ऊपर छत्र-छाया के रूप में सुरक्षा प्रदान कर रहा है। ये दीपक अनेकों के बुझे दीपकों को जला रहे हैं और शीघ्र ही विश्व की सभी आत्माओं के दीपक जग जाएँगे और जग पूर्णतया प्रकाशित हो जाएगा। ये शिव-शक्तियाँ धरती के चेतन सितारे हैं जिनकी रिमझिम इस कलिकाल के अन्धकार में देखते ही बनती है।

ये शिव-शक्तियाँ सभी विघ्नों को निर्भीकता से पार करती हुई आगे बढ़ रही हैं। चाहे मार्ग में कितनी भी बाधाएँ आ जाएँ, चाहे समस्त विश्व इन्हें रोकना चाहे, परन्तु ये विश्व में 'सत्य' को प्रकट करके ही रहेंगी। क्योंकि इन्हें प्राप्त 'सत्य', स्वयं शिव का है, और उसी शिव के 'सत्य' द्वारा ये विश्व को सुन्दर बनायेंगी। ❀

(विश्व एकता पृष्ट १८ का शेष)

उपर्युक्त सभी बातें तो विश्व एकता के लिये आवश्यक हैं ही, लेकिन इसके अलावा वर्तमान समय में विश्व एकता के स्वप्न को साकार करने के लिये आवश्यकता है—परमात्मा द्वारा दिये जा रहे "सत्य गीता ज्ञान" की। और उस "सत्य गीता ज्ञान" को व्यावहारिकता में लाने की।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जब हम परमात्मा द्वारा दिये जा रहे ज्ञान को व्यावहारिकता में लायेंगे, जब सभी धर्म की आत्माएं एक ईश्वर की सत्ता में विश्वास करेंगी, अपने स्वरूप को धारण करेंगी और जब हमारे अन्दर "वैचारिक एकता" होगी, तभी हम विश्व एकता की आशा और कल्पना कर सकते हैं।

□□□

विश्व एकता

लेखक—ब्र० कु० राजेन्द्र कुमार लावत, उज्जैन

विश्व एकता की गूंज वर्तमान समय में चारों ओर सुनाई देती है। निम्न स्तर से लेकर उच्च स्तर तक अर्थात् हर स्तर के लोगों में एकता की बातें की जाती हैं। आज विश्व का कोई व्यक्ति, समाज और देश ऐसा नहीं होगा, जो विश्व में एकता नहीं चाहता हो। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी विश्व एकता का एकमत से समर्थन करते हैं और यह चाहते हैं कि विश्व में एकता हो। बहुत हद तक यह बात ठीक भी है, क्योंकि विश्व एकता वर्तमान समय की एक अनिवार्य आवश्यकता है।

विश्व एकता का स्वरूप

विश्व एकता की बात तो आज हर स्तर पर की जाती है, लेकिन इसकी व्यावहारिकता पर कोई ध्यान नहीं देता है। बातें केवल बातें ही बनकर रह जाती है। कोई भी विश्व एकता के स्वरूप को प्रदर्शित नहीं करता है। प्रश्न उठता है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एकता का स्वरूप क्या होना चाहिये ? इस प्रश्न के उत्तर को समझने के लिये हमें सृष्टि के आदिकाल अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग पर दृष्टि डालना आवश्यक है। सतयुग और त्रेतायुग जहाँ पर कि देवी-देवताओं का एक छत्र राज्य था, एकमत एक राज्य, एक भाषा और एक कुल था। विश्व एकता का सच्चा और वास्तविक स्वरूप तो यही है।

विश्व एकता का आधार

विश्व एकता की बात तो आज सभी करते हैं, लेकिन विश्व में एकता कैसे होगी, इसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता है। केवल बातें ही बातें चलती हैं उन्हें व्यवहार में लाने की कोशिश नहीं की जाती है। विश्व एकता के आधारों के अन्तर्गत सबसे पहली बात जो है, वह धर्म से सम्बन्धित है। आज सारी दुनिया में अनेक धर्म और सम्प्रदाय हैं। इन धर्मों और सम्प्रदायों ने व्यक्ति और समाज को अनेक वर्गों और समूहों में विभाजित कर रखा है। और यही धर्म और सम्प्रदाय अपनी अलग-अलग मान्यताओं के कारण व्यक्ति, समाज और देशों को एक नहीं होने देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि विश्व एकता के मार्ग में आज सबसे अधिक बाधक तत्व है—धर्म। यदि सभी धर्मावलम्बी, जो यह कहते हैं, कि भगवान एक है (God is One) इस बात को यदि व्यावहारिकता में ले आयें और यदि एक धर्म और एक ईश्वर में सभी अपना विश्वास व्यक्त कर दें, तो यही एक धर्म और एक ईश्वर में विश्वास विश्व एकता का एक सशक्त आधार बन सकता है।

विश्व एकता का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण और सशक्त आधार है—"वैचारिक एकता।" या यों कहिये कि "वैचारिक एकता" विश्व एकता की पहली सीढ़ी (स्टेज-Stage) है। जब तक हमारे विचारों में एकता नहीं होगी, तब तक विश्व में एकता कायम नहीं हो सकती। क्योंकि वर्तमान समय में सबसे अधिक मतभेद और अनेकता हमारे विचारों में है। अतः हमारे विचारों में एकता की आवश्यकता है। अर्थात् जिस प्रकार से आप बगैर पटरी के रेल चलने की कल्पना नहीं कर सकते, उसी प्रकार बगैर "वैचारिक एकता" के विश्व एकता की कल्पना नहीं की जा सकती है। "वैचारिक एकता" विश्व एकता की आधारशिला है।

विश्व एकता का तीसरा आधार है "वसुधेव कुटुम्बकम्" की भावना। अर्थात् हम सारी ही पृथ्वी को कुटुम्ब (परिवार) समझकर चलें। और यह भावना हमारे अन्दर तभी आ सकती है, जबकि हम यह मानकर चलेंगे कि सारी सृष्टि का रचयिता एक परमात्मा ही है और वही हम सभी का पिता (God Father) है। इस नाते हम सभी आपस में भाई-भाई हैं। जब इस बात को हम अपनी वृत्ति में बसा लेंगे, तभी "वैचारिक एकता" और उसके पश्चात् "विश्व एकता" की कल्पना कर सकते हैं।

विश्व एकता के आधारों के अन्तर्गत चौथी बात विश्व एकता की बात करने वालों से सम्बन्धित है। आप देखिये कि दुनिया में विश्व एकता स्थापित करने के प्रयत्न करने वाली अनेक संस्थाएं हैं और अनेक सम्प्रदाय हैं। जो यह कहते हैं कि हम विश्व में एकता या एकमत स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि ये जो संस्थाएं हैं या सम्प्रदाय हैं, इनमें इतनी एकता है, जो वह एकता लोगों के सामने एक उदाहरण के रूप में पेश की जा सके। कहने का तात्पर्य केवल यह है कि जो संस्थाएं विश्व में एकता की बात करती हैं या जो सम्प्रदाय यह चाहते हों कि विश्व में एकता हो, पहले उनमें स्वयं में एकता होनी चाहिये। आज दुनिया में ऐसी संस्थाएं और ऐसे लोग भी हैं, जो विश्व में एकता और एकमत स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील हैं, लेकिन स्वयं उन संस्थाओं में ही फूट, मतभेद और टकराव है। ऐसी बातें देखकर आश्चर्य होता है कि जिनमें स्वयं में ही एकता नहीं है, वे विश्व में एकता और एकमत स्थापित करने की बात करते हैं। मेरी समझ में नहीं आता है कि ऐसे लोग या संस्थाएं क्या अपने अन्दर व्याप्त मतभेद, टकराव और फूट के आधार पर विश्व में एकता और एकमत स्थापित करने का दम भरते है? कहने का तात्पर्य केवल यह है कि जो भी विश्व एकता की बातें करते हैं, उनमें स्वयं में ऐसी एकता होनी चाहिये, जो कि लोगों की निगाहों में एक आदर्श बन जाये।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

हे संगमयुगी ब्राह्मण!

ले०—ब्र० कु० रणजीत, कलकत्ता

संगम के हे द्विज महान्
कर ले ज़रा अपनी पहचान!
कठिन यदि तुझको लगता,
शिव बाबा से इसको जान!!
मुख पर मधु-मुस्कान हो,
कानों का कुण्डल ज्ञान हो!
हर कर्म सदा महान् हो,
दान सदा वरदान हो!!
बदला लेना न चाह हो,
बदल दिखाना राह हो!
ज्ञान सदा अथाह हो,
विकर्म सम्पूर्ण दाह हो!!
सरलता अपना स्वभाव हो,
सर्व में सदा समभाव हो!
गुणों का न कभी अभाव हो,
सेवा में सदा ही चाव हो!!
कलियुग चाहे विध्वंस हो,
तुम तो अविनाशी वंश हो!
रावण आए या कंस हो,
तुम तो सदा होली हंस हो!!
श्रीमत की सदा निभाना रीत,
शिव बाबा के गाना गीत!
बनाना उसी को सच्चा मीत,
अवश्य तुम्हारी होगी 'जीत'!!

—:०:—

महुआ उप सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित "नव देवी झांकी" के उद्घाटक माननीय रमण भाई चित्तलीया जी को ब्र० कु० गीता आध्यात्मिक रहस्य समझा रही हैं। साथ में ब्र० कु० शोभा व ब्र० कु० एन. पी. पटेल साहब भी उपस्थित हैं।

गाजियाबाद लोहिया नगर सेवा केन्द्र पर पधार कर चित्रों की व्याख्या सुनने के पश्चात् अपने विचार लिखते हुए अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश भ्राता बी. बी. एस. चौधरी तथा चीफ जुडिशियल मजिस्ट्रेट भ्राता जगदीश सिंह जी तथा उनकी पत्नी, साथ में बैठी है ब्र० कु० कमलेश तथा अन्य बहन भाई।

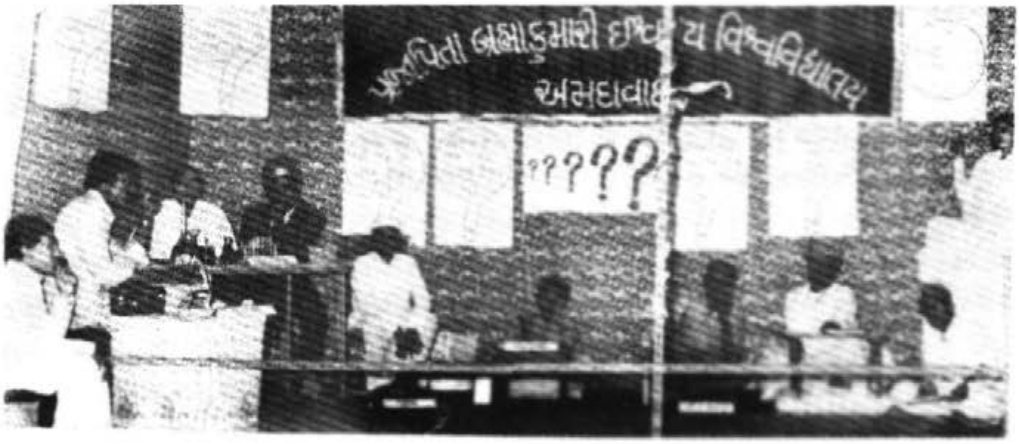

अहमदाबाद–गिरधर नगर से केन्द्र द्वारा चेतन झांकी "अ की समस्या–क्या होगा ?" दृश्य।

बलसार में नव रात्रि के अवसर पर नव देवियों की चैतन्य झांकी बनाई गई। इसे हजारों भक्तों ने देखा। उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० लता प्रवचन करते हुए।

भक्तपुर (नेपाल) में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर ब्र० कु० राज प्रवचन करते हुए। चित्र में त्रिभुवन विश्वविद्यालय के प्राध्यापक तथा राष्ट्रीय पंचायत के सदस्य व प्रधान पंच साथ में बठे हैं।

अहमदाबाद बापू नगर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता बचाजी (सदस्य विधान सभा) द्वारा किया जा रहा है। ब्र० कु० वीर बाला, ज्योत्सना दिपिका तथा अन्य भाई बहन साथ में उपस्थित हैं।

ग्वालियर में विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी का उद्घाटन उच्च न्यायालय के एडवोकेट भ्राता मदन मोहन कोशिक जी कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० प्रतिभा तथा सुनीता खड़ी हैं।

कोल्हापुर में "विश्व शान्ति महोत्सव" में डा० गिरिष भाई डॉक्टरों को चार्ट पर समझा रहे हैं। साथ में ब्र० कु० मनोहर भाई खड़े हैं।

भठिंडा में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेले में राजयोग शिविर का उद्घाटन करने सत्र न्यायाधीश भ्राता ग्रेवाल जा पधारे। उन्हें ब्र० कु० कमलेश जी बैज लगाते हुए।

करनाल — कर्णताल सेवा केन्द्र द्वारा नीलोखेड़ी में सहज राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता सी. एल. राणा द्वारा दीप प्रज्जवलित कर सम्पन्न किया।

सच्चा धन

ब्र० कु० लक्ष्मीचन्द, रुड़की

मीरा दादी अपने दो युवा पोत्रों को समझा रही थी—बेटो, सच्चा धन ईश्वरीय ज्ञान है। तुम दोनों बच्चे बड़े होवनहार हो, तुम स्वर्ग के राजा बनोगे। तुम इस विनाशी धन के पीछे अपना सारा समय न गँवाया करो।

बेटो, भगवान एक ही बार धरती पर आता है और तुम मेरे बच्चे बड़े भाग्यशाली हो, जो तुमने भगवान को पहचान लिया और पवित्र जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया। तो इस अमूल्य समय को केवल पैसे कमाने में ही न बिताओ, जन्म-जन्म की अविनाशी कमाई की ओर भी ध्यान दो।

अनिल—आपकीं बात तो सोलह आने सहीं है दादी माँ, पर धन का ही तो सब जगह मान है। "तुलसीदास गरीब की, कोई न पूछे बात।" अतः हम धन कमायेंगे, और सेवा में लगायेंगे और हमारी इज्ज़त बढ़ेगी

दादी माँ ने फिर समझाया। यह तो ठीक है बेटे, पर तुम रोज़ सत्संग में भी तो जाया करो और रोज़ सवेरे उठकर योग भी किया करो। उसका ज्यादा महत्व है बेटे। देखो भगवान ब्रह्मलोक से पढ़ाने आया और तुम पढ़ने भी नहीं जाते। तुम धन्धे में थक जाते हो, फि 8.0 बजे उठते हो। ऐसी कमाई से क्या लाभ ?

हाँ, दादी माँ थक जाते हैं फिर नींद नहीं खुलती। सुनील ने स्वीकार किया। परन्तु हमने ज्ञान तो समझ हीं लिया। हम कभी-कभी शाम की क्लास में भी तो जाते हैं। सेवा से ही तो भाग्य बनता है। हम धन कमायेंगे, खूब सेवा करेंगे। माँ दूसरों के आशीर्वाद से ही हमारा कल्याण हो जाएगा।

मीरा दादी ने समझाया, मेरे बेटो, तुम बड़ें भोले हो। मैं तुम्हें एक सत्य कहानी सुनाती हूँ। उससे तुम प्रतिदिन क्लास करने का महत्व समझ सकोगे। बेटो, ये पवित्र जीवन तो तुम्हें पसन्द है ही ?

सुनील बोला—हाँ, माँ, इस जीवन को हम किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेंगे।

तो सुनो बेटो—रामू नाम का एक तुम्हारे जैसा ही बड़ा सज्जन कुमार था। देखने में बड़ा सुशील, योगी लगता था। सभी उसके गुणगान करते थे। उसे पवित्र जीवन बहुत प्यारा लगता था। कहता था, मर जाऊँगा, पर पवित्र रहूँगा। और सुनो··· क्लास में सबसे पहले आता था। सेवा में तो बस रामू ही रामू सर्वव्यापी था।

हाँ माँ, यह तो अच्छी बात है—अनिल बोला।

परन्तु पता है, फिर क्या हुआ···

क्या हुआ ?

फिर यही फितूर उसके मन में भी आया कि पैसा कमाऊँ और सेवा में लगाऊँ। पैसे वालों का ही मान है और उसने टाइपिस्ट की दुकान खोली। धीरे-धीरे ग्राहकी बढ़ी और उसका लोभ भी बढ़ा। उसने कई मशीनें खरीदीं और विद्यार्थियों को टाइपिंग सिखाने लगा।

यह तो अच्छी बात है—अनिल बोला।

परन्तु बेटा, फिर उसने 7·0 बजे दुकान जाना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे उसकी सवेरे की क्लास छुटने लगी। पैसा कमाने के चक्कर में योग छूटने लगा। और यही क्रम एक-दो वर्ष चला।

आश्रम की दीदी ने रामू को बहुत समझाया—रामू, बिना क्लास, तुम नहीं चल सकोगे, तुम विनाशी कमाई के पीछे अपनी अविनाशी कमाई खो रहे हो। तुम पैसा कमाने के चक्कर में सेवा में भी नहीं आते।

रामू ने कहा—मैं ठीक हूँ दीदी, पैसा कमा लूं फिर बैंक में रख दूंगा और ब्याज पर ही काम चल जाया करेगा।

परन्तु रामू अन्दर से खाली होता जा रहा था। ज्ञान-योग की कमी, उसे दुनिया की ओर खींच रही थी।

धीरे-धीरे उसके खान-पान में ढील आई। फिर मित्रों के कुसंग ने उसके दिन फेर ही दिये, मित्र उससे शादी की बातें करने लगे और उसका मन भी बरबस खिचने लगा।

आश्रम की दीदी उसे सावधान भी करतीं रही, परन्तु वह टालता रहा और कहता रहा कि मेरी स्थिति ठीक है।

और आखिर वह दिन भी आ गया, जब उसका ज्ञान-ध्यान गया गड्ढे में और उसकी शादी हो गई। भगवान का साथ छूट गया, मन की खुशियां क्षीण हो गई और दुख भरे दिन शुरू हुए···

स्वप्न कुछ और देखे थे, परन्तु भाग्य ने साथ नहीं दिया, और पत्नी आते हीं बीमार रहने लगी। रामू ने काफी इलाज कराया, परन्तु रोग बढ़ता ही रहा।

सुनो बेटे, अब रामू का जीवन बहुत ही अशान्त है। पत्नि का सुख तो स्वप्न बन गया। उसकी संभाल में ही रामू चिन्तित रहता है। कभी-कभी आश्रम पर आता है, बहुत पछताता है और रोता है।

तो मेरे बेटो—ये ज्ञान-योग ही सच्चा धन है। विनाशी धन से न कभी पेट भरता न सुख-शान्ति मिलती। अतः मेरे समझदार बेटो—धन भी कमाओ, मैं ये नहीं कहती कि तुम भूखे रहो। परन्तु रोज अमृत बेले योग और क्लास भी करो तब तुममें बल रहेगा और तुम ईश्वरीय सुख पा सकोगे। नहीं तो बेटो, आज संसार में माया का प्रभाव बहुत है। धन तो फिर भी मिल जायेगा, परन्तु हमारे शिव-बाबा फिर नहीं मिलेंगे।

अनिल व सुनील बहुत खुश हुए और बोले—दादी माँ, आपने हमारी आँख खोल दी। अब हम ऐसा हीं करेंगे।

हर कर्म, सत्यं-शिवं-सुन्दरं भी होना चाहिए

लेखक—ब्रह्माकुमार सूरज प्रकाश, सहारनपुर

कर्म तो करना मगर, याद यह रखना सदा।
हर कर्म में '**सत्यं-शिवं-सुन्दरम्**' भी होना चाहिए॥
हम ब्राह्मण हैं चोटी, हमारी है ये कसौटी।
हर कार्य अपना श्रेष्ठ और '**अनुपम**' भी होना चाहिए॥
देवता बनना है अगर, तो जीवन में हमारे सदा।
मधुरता, सरलता और '**संयम**' भी होना चाहिए॥
अमरनाथ से अमरभव का वरदान लेना है अगर।
तो प्रातः उठने का सदा '**नियम**' भी होना चाहिए॥
साक्षीमूर्त बनकर हर कर्म तो करें मगर।
सदा नैनों में बसा '**प्रियतम**' भी होना चाहिए॥
अगर चाहते हो संगम का एक पल भी न जाये व्यर्थ।
तो बुद्धि में इस युग का '**महातम**' भी होना चाहिए॥
ज्ञान तो धारण करे नित्य प्रति हम मगर।
योग से पापों का खाता '**भस्म**' भी होना चाहिए॥
वृत्ति से अपनी बदल दें, सारे वायुमंडल को जो।
ऐसा पावरफूल '**आत्म-बम**' भी होना चाहिए॥
बैर और कटुता से, मुर्झा जाते हैं मन के चमन।
जिन्दगी में प्यार की '**सरगम**' भी होना चाहिए॥
भाव-स्वभाव से अगर हो जाते हैं मन में ज़ख्म।
तो पास अपने ज्ञान का '**मरहम**' भी होना चाहिए॥
ईश्वरीय पथ पर तूफान तो आयेंगे मगर।
तूफानों और विघ्नों का '**वैलकम**' भी होना चाहिए॥
दिलशिकस्त न हो कभी, मुश्किल न कुछ अनुभव करें।
पुरुषार्थ इतना सरल और '**सुगम**' भी होना चाहिए॥
माया तो आयेगी अनेक रूपों से मगर।
हमको हिला सके न ये '**दम**' भी होना चाहिए॥
अगर चाहते हो खुशी का पारा सदा चढ़ा रहे।
हर हाल में हमको '**बेगम**' भी होना चाहिए॥
ठीक है हमने जो पाना था सो पा लिया मगर।
मन में अपने दूसरों का '**गम**' भी होना चाहिए॥
अनेक आत्मायें दुखी भटक-सी जहान में।
उनके प्रति मन में '**रहम**' भी होना चाहिए॥
ज्ञान मार्ग से हम, उठाते हैं जो भी कदम।
वो उड़ती कला में जाने का '**माध्यम**' होना चाहिए॥

एक सम्वाद

"भावना व विवेक का सन्तुलन"

(ब्र० कु० हिरण्य, आबू)

भावना बहन व विवेक भाई

विवेक—भावना बहन, नमस्ते, कहो क्या हाल-चाल है तुम्हारे···

भावना—ठीक है विवेक भाई···तुम मेरे बड़े भाई हो—हम व तुम कभी-कभी साथ रहते थे—परन्तु वे दिन पूरे हो गए···अब तो तुम्हारा प्रभाव बढ़ता जा रहा है। हमें अब लोग उतना सत्कार नहीं देते।

विवेक—ठीक है भावना बहन···यह तो संसार का फेरा है, कभी किसी की महिमा, कभी किसी की ···"सबै दिन जात न एक समान।"

भावना—परन्तु जबसे तुम्हारा प्रभाव बढ़ा, मनुष्य का जीवन नीरस सा हो गया है। अकेला विवेक तो कोरा सन्यास है···और मनुष्य धर्म कर्म, पाठ, पूजा को कल्पना व आडम्बर कहने लगे हैं। यह सब तुम्हारा ही प्रभाव है।

विवेक—तुम गलत समझी भावना...देखो जबसे भक्ति शुरू हुई मनुष्य का पतन होता ही रहा···। भक्ति काल में धर्म में तुम्हारा आधिपत्य होने से पण्डितों ने मेरा नाम निशान तक मिटा दिया था। फलस्वरूप दिनों दिन पतन होता ही रहा, धर्म निर्बल पड़ गया। इसका कारण—तुम्हारा अधिक प्रभाव था। अगर वे मुझे भी साथ रखते तो कम से कम उनका पतन तो न होता।

भावना—तुम पतन का दोष मुझ पर मढ़ना चाहते हो विवेक। ये क्यों नहीं कहते कि तुम्हारी अधिकता से मनुष्य का अहंकार बढ़ता रहा, इस कारण उसका पतन हुआ। हर मनुष्य सदा दूसरों पर ही दोषारोपित करता है···स्वयं के दोष देखने का विवेक तो जैसे तुम्हें भी मिला ही नहीं···।

विवेक—बहन, तुम नाराज न हो, मेरे बिना तो मनुष्य बुद्धू है। भला मेरे बिना विकास कैसे सम्भव है?

भावना—ठीक है विवेक···परन्तु मेरे बिना मनुष्य में सच्चरित्रता व नम्रता नहीं आती। वो विकास अधिक स्थाई नहीं होता जिसमें चरित्र का बल न हो।

विवेक—मेरे आधार पर ही तो आज विज्ञान ने मनुष्य को अथाह सुख की सामग्री दी है।

भावना—परन्तु विवेक, आज वास्तविक सुख व शान्ति तो लुप्त होता जा रहा है। मनुष्य मेरे सहारे ही सच्ची सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता है।

विवेक—आत्मा को सद्विवेक ही नहीं मिलेगा तो वह दुष्कर्मों से बचेगा कैसे जो सुख-शान्ति मिले।

भावना—परन्तु आज विवेकवान मनुष्य ही तो अधिक पापी है। मेरे अभाव में वे तुम्हारा दुरुपयोग करते हैं। तुम फिर से मुझे साथ लो तो मनुष्य का उत्थान हो···अगर मनुष्य में भावना हो तो भगवान का डर हो, तब ही वह पाप कर्मों से बच सकेगा। और सुख शान्ति तभी उसका वरण करेंगी।

विवेक—कहती तो तुम ठीक है भावना···परन्तु आजकल तो लोग मुझे ही मान्यता दे रहे हैं···यह मेरी गलती नहीं, समय का प्रभाव है।

भावना—तुम अब मनुष्य को सद्विवेक दो, नहीं तो मनुष्य तुम्हें भी नष्ट कर देगा।

विवेक—मैं तो क्या, देखो भगवान स्वयं भी विवेक देने आया है जिसे दिव्य बुद्धि कहते हैं। विवेक देकर ही वह मनुष्य आत्माओं को पावन बनाकर मुक्ति का वरदान देगा।

भावना—परन्तु अगर भगवान में भावना ही न हो तो वे उससे ज्ञान क्यों लेंगे? इसलिए मेरा महत्व अधिक है विवेक···।

विवेक—भावना बहन—तुम्हारा महत्व केवल भक्ति में था अब ज्ञान मार्ग में तुम्हारी आवश्यकता भी क्या है···।

भावना—यह तुम्हारा अहं है विवेक भाई—तुम अब नम्र बनो। इस ज्ञान मार्ग में भी अगर मैं न हूँ तो आत्मा को शिव बाबा के वास्तविक स्नेह व परिवार का आभास नहीं होता और वह अपने को अकेला ज्ञानी संन्यासी-सा महसूस करता है।

विवेक—परन्तु शिव बाबा तो है ही ज्ञान का सागर भावना का सागर तो उसकी महिमा ही नहीं।

भावना—तुमने फिर गलत व्याख्या की विवेक—वह तो ज्ञान का सागर है ही—वह ज्ञान देता है परन्तु लेने वालों में भावना होनी चाहिए। भावना के बिना देने वालों का उतना मान भी नहीं करते—फलस्वरूप ज्ञान भी धीरे-धीरे लोप होने लगता है।

विवेक—परन्तु मेरा आधार लेने वाले पुरुषार्थी सदा ज्ञान-मार्ग से सदा अडोल व तीव्रवेगी होंगे। केवल तुम्हारे जिज्ञासु ही भक्त बने रहेंगे।

भावना—विवेक बन्धु, मेरे बिना किसी को भी योग का वास्तविक आनन्द आ नहीं सकता। जब किसी आत्मा की ये भावना प्रबल हो कि मेरे तो सभी सम्बन्ध एक से हैं, मेरा तो एक है···तभी तो योग के वास्तविक आनन्द का अनुभव हो।

विवेक—मेरे बिना सेवा में भी कहाँ सफलता होगी।

भावना—नहीं-नहीं मैं हूँगी तब ही तो सेवा में तन, मन, धन, व समय, कोई लगायेगा। तुम्हारा प्रयोग तो बहुत पीछे होता है।

विवेक—कहती तो तुम ठीक हो बहन, लोगों ने तुम्हें छोड़कर गलती ही की अब तुम्हारी पुनः आवश्यकता है।

भावना—अब तुमने जाना—चाहे भगवान भी रास्ता बताये, परन्तु जब तक भावना न हो उन्नति नहीं हो सकती।

विवेक—हाँ, तो तुम्हारा व हमारा साथ अविनाशी हो, आओ हम एक साथ चलें।

भावना—धन्यवाद विवेक भाई—एक बड़े भाई का यही कर्त्तव्य है।

दोनों साथ-साथ चले जाते हैं।

सद्ज्ञान दान देने 'बाबा'! तब भारत भू पर आता है

ब्र० कु० एम० पी० तिवारी, पत्रकार, बिलासपुर, म० प्र०

शिव बाबा के ब्राह्मण बच्चे,
सतयुग में फिर से आते हैं॥
संगम युग में जो सेवा की,
तदरूप देव पद पाते हैं॥
रहते पवित्र नित जीवन में,
माया से ग्रसित न होते हैं॥
आनन्द प्राप्ति होती असीम,
सुख-शान्ति सिन्धु में होते हैं॥
त्रेता के अन्तिम चरणों तक,
सब पतित स्वयं बन जाते हैं॥
निज रूप लक्ष से विस्मृत हो,
मृग तृष्णा में खो जाते हैं॥
देहाभिमान वश द्वापर में,
सब पूज्य पुजारी बनते हैं॥
भाँति-भाँति के कर्म काण्ड,
भक्ति पूजा सब करते हैं॥
मिट्टी, पत्थर और जीव-जन्तु,
कलियुग में पूजे जाते हैं॥
सद्ज्ञान रहित गति विधि अपना,
निज कर्मों से दुख पाते हैं॥
जब बढ़ जाती व्यभिचारी भक्ति,
पावन 'संगम' युग आता है॥
सदज्ञान दान देने 'बाबा'
तब भारत भू पर आता है॥

"अफसाना"

ब्रह्माकुमार देवदत्त, भावनगर

"अफ़साना लिख रही हूं दिले बेकरार का।
आँखों में रंग भर के तेरे इन्तजार का।।"

आत्मा परमात्मा को प्राप्त करने के लिए कितनी व्याकुल थी और उसे प्राप्त करने के लिए क्या-क्या किया इसका वर्णन किया है और अन्त में परमात्मा से मिलन मनाकर किस प्रकार विश्व-कल्याण की भावना जागृत होती है, उपरोक्त गीत की पंक्तियों को आधार बनाकर इन्हीं बातों को स्पष्ट किया है।

ओ मेरे दिलबर (प्यारे शिव बाबा)! तुझे क्या इस बेकरार दिल का हाल सुनाऊँ? मैं (आत्मा) तुझे कब से ढूंढ़ रही थी, कितनी तड़प रही थी तेरे बिना, यह हाल कैसे वर्णन करूँ?

तेरी मनोरम छवि को निहारने के लिए मेरी रूह बिरहनी बन चुकी थी; हर कण में तेरा अहसास पाने को लालायित थी। तेरी याद में इतनी तो बेकरार थी कि हर कण को सजीव अथवा चेतन मानकर तथा शिव और शंकर को एक मानकर तेरा हाल पूछ रही थी—"कंकड़-कंकड़ से मैं पूछूँ, शंकर मेरा कहाँ है।"

भक्ति की दुर्गति में भी तेरी याद भूली नहीं। अनेक जन्मों से, कितनी सदियों से तुझे मैं (आत्मा) ढूंढ़ रही थी। भक्ति में यज्ञ भी किए और कुरान भी पढ़े। मन्दिर में भी ढूंढ़ा, मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे में भी लेकिन सच्चे सद्गुरू का द्वार नहीं पा सकी।

तीर्थ भी किए और व्रत भी।

कितने यम नियमों में मैं फँसी थी इसका क्या हवाला दूँ। तेरे मनोमुग्धकारी रूप को मैं हर पत्ते में निहारने के लिए अधीर थी क्योंकि लोगों को तेरी महिमा में यह गीत गाते सुना था—

"पत्ते-पत्ते पे झाँकी उस भगवान की।
किसी सूझवाली आँख ने पहचान लो।।"

पत्ते तो मैंने भी अनेक देखे लेकिन तेरा पता नहीं मिला। हृदय के उद्गार वाणी से मुखरित होकर गीत, भजन, कीर्तन के रूप में निकलने लगे। लेकिन इन्हें सुनते हुए भी श्रवण युगल तेरे नाम से विरक्त हुए तथा चरण नास्तिकता की ओर बढ़े।

लोगों को कई बार यह कहते भी सुना, "ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या।" अगर जगत मिथ्या है तो फिर सत्य क्या है यह जानने की लालसा और भी तीव्र हो उठी। कहीं नाद सुनाई दिए, "शिवोऽहं ततात्वाम्" अथवा 'आत्मा सो परमात्मा' या 'ब्रह्मोऽस्मि' लेकिन यह सब सुनकर भी चैन नहीं मिला।

तेरे मधुर चरित्रों का वासनामय रूप मैंने सर्वत्र देखा। राधे कृष्ण तथा शिव-पार्वती के प्रसंगों में सन्त-महात्माओं की कुत्सित भावनाएँ देखीं। पीर-पैगम्बर झूठे अभिमान में फँसे देखे। वैरागी भी राग-द्वेष में प्रवृत्त देखे। कई लोगों को ब्रह्म में लीन होने का पुरुषार्थ करते देखा और विकराल काल के अन्तराल में विलीन हो गए, ब्रह्म का भेद नहीं पा सके।

फिर कुछ शब्द कानों में पड़े। सुनकर अद्भुत लगे कि शिव और शंकर अलग हैं। हम आत्माएँ ढाई हज़ार वर्षों से उन्हें ढूंढ़ रही हैं और वह परमात्मा स्वयं ज्योति-बिन्दु स्वरूप हैं···इत्यादि!

बस फिर क्या था, आँखों में तेरा दिव्य रूप बस गया। सिलौना, मनोरम आनन्दमयस्वरूप। ज्योति-स्वरूप के आगमन का समाचार सुनकर जैसे दो युगों की थकान एक ही क्षण में उतर गई; आँखों में तेरे इन्तजार का नहीं प्यार का रंग भर गया।

बेकरार दिल को राहत मिली। मन की कली

खिली, सच्चे पर साहिब राज़ी, मन की मुराद मिली। वह तराने अथवा फ़साने जो तेरी याद में गुनगुनाया करते थे, भ्रम मात्र बनकर रह गए। तुझे पाकर उन तरानों और फ़सानों का रंग बदल गया।

तुझ से मिलन मनाकर हर क्षण तेरे प्यार में बीते और तेरे अवतरण का समाचार सब मुझ जैसी भूली-भटकी आत्माओं को मिले जो तेरी याद में आज भी तराने (भजन-कीर्तन) आदि गा रही हैं, जो तुझे पाने के लिए त्रेसठ जन्मों से झूठे कर्म-काँडों में फँसी हुई हैं। अब कोई भी तेरा इन्तज़ार न करे बल्कि महानाश से पूर्व ही अपने भविष्य को श्रेष्ठ बनाने का इन्तज़ाम करे अथवा लक्ष्य रखे। ब्रह्म में लीन होने के बजाय ब्रह्मलोक में जाने की तैयारी करे।

एक मैं ही नहीं, अपने बेकरार दिल का अफ़साना कितनी ही आत्माएँ लिख रही हैं और फिर भी लिखेंगी लेकिन उनका अफ़साना अधूरा न रहे, उनकी आँखों में भी तेरे अनूप रूप का चित्र हो और देवी-देवताओं जैसा चरित्र हो, विश्व कल्याण की भावना हो। माया से मूर्छित हुई रूहों को तेरे अवतरण की सूचना रूपी संजीवनी मिले और तेरी श्रेष्ठ मर्यादा (श्रीमत) को अपना सकें। याद की यात्रा में सूर्य, चाँद और तारागणों से पार ब्रह्मलोक तक जा सकें। तेरे अलौकिक रूहानी प्यार को अश्रु-हार, स्नेह और गुणों की पुष्पमाल गूँथा करें। किसी भी गुरू या मन्त्र का आश्रय न लेकर सद्गुरु के सद्गुणों को ग्रहण करें। किसी शिवालय या देवालय में दर्शन करने न जाकर अपना जीवन ही दर्शनीय बना लें। ऐसे ही भाव पुनः-पुनः मन में उठते हैं।

जब तेरा सच्चा परिचय मिल जाता है तो आँखों में स्वाभाविक रूप से तेरे प्यार का रंग भर जाता है। मैं आत्मा-शान्ति स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप हूँ—सर्व शक्तिमान परमात्मा की अविनाशी सन्तान हूँ, वह परमात्मा शान्ति, प्रेम और आनन्द के सागर हैं, इत्यादि ज्ञान बिन्दुओं के मनन चिन्तन से एक अलौकिक खुशी की दिव्यानुभूति होती है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" का भाव जागृत होता है।

तेरे साथ सम्बन्ध जुड़ जाने पर बेकरार दिल राहत पा लेता है। सब आत्माएँ तुझ एक अविनाशी साजन की सजनियाँ बन जाएँ, ऐसी श्रेष्ठ भावना मन में उठती है। तेरा सच्चा परिचय न पा सकने वाली आत्माओं के प्रति मन में करुणा भर जाती है। विकारों के तिमिर में तुझे ढूँढने वालों को तेरे दिव्य रूप गुण और धाम का परिचय देकर मन को अपार हर्ष होता है। पहले तो तुझे ढूँढ़कर मिलन मनाने को दिल बेताब था लेकिन तुझे पाकर दिल की बेताबी और भी बढ़ गई। किस तरह विश्व के कोने-कोने में तेरा सन्देश पहुँचे और सभी तुझसे मिलन मनाकर अपना जन्म सिद्ध अधिकार पा लें यह ख्याल अथवा मीठी "टीस" उठने लगती है।

कहते हैं प्यार की लगी कभी बुझती नहीं !

तेरा आभास मिलते ही तुझसे मिलने की इच्छा उत्कठ हो उठी। जितना-जितना तेरा सामीप्य प्राप्त हुआ, उतना ही मन तेरे प्रति और भी खिच गया। अब तो मनसा चक्षुओं से मैं तुझे ही निहारती हूँ, विकर्मों के शूल तेरी याद में फूल बन जाते हैं। निंदक भक्त बनते हैं जो द्वापर युग से हमारी जड़ यादगारों के आगे माथा रगड़ते हुए अपने पापों का प्रायश्चित करते हैं।

इस समय के पुरुषार्थ से ही हम भविष्य में देवी-देवता पद प्राप्त करते हैं, इस रहस्य को न जान सकने के कारण बेचारे माया के मुरीद तेरी (शिव परमात्मा की) भी निन्दा करते हैं और मेरी (शालिग्राम अथवा श्रेष्ठ देवी-देवताओं की) भी, उस समय तेरे यह महावाक्य दिल में दया भर जाते हैं कि, "बच्चे, सहन करने से ही तुम सहनशील अथवा 'शहनशाह' बनोगे।" पानी की लहरों में टकराते-टकराते जैसे पत्थर शिवलिंग अथवा शालिग्राम बन कर पूजनीय बन जाता है, वैसे ही माया के तूफानों को 'तोहफ़ा' समझकर सहोगे तो भविष्य सतयुग में तुम अखण्ड और निर्विघ्न राज्य "तोहफ़े" के रूप में प्राप्त करोगे।"

वैसे तो लिखने लगूँ तो पाँच हजार वर्षों में अपने उत्थान और पतन का लम्बा इतिहास लिख सकती हूँ लेकिन थोड़े में ही पूरी कर रही हूँ क्योंकि बहुत कुछ लिखने के उपरान्त भी लिखने के लिए बहुत कुछ रह जाता है। इस समय तो गीत-पंक्तियों के साथ बेताब दिल के जो भाव उठे वही शब्दों के रूप में रख रही हूँ—

अफ़साना लिख रही हूँ दिले बेकरार का।
आँखों में रंग भरके तेरे अनोखे प्यार का॥ ☐

योगी और भय

ब्र० कु० रुक्मणी, अकोला (महाराष्ट्र)

योगी और भय—एक नहीं, अलग-अलग हैं। जहाँ योग है वहाँ भय नहीं और जहाँ भय है वहाँ योग नहीं। योगी शब्द ही निर्भीकता का प्रतीक है। योगी जीवन अति निराला और मस्त जीवन है। अगर सत्य कहें तो योगी जीवन से बढ़कर आनन्दित जीवन और कोई नहीं है। योगी का जीवन ही सफल है, भोगी का नहीं। योगी जीवन ही अति सरल और सुख देने वाला कहा गया है।

मनुष्य के भय के कई कारण होते हैं—कुछ सूक्ष्म, कुछ स्थूल। परन्तु योगी जीवन ही उन सब कारणों का निवारण है—इसलिए योगी को भय नहीं होता। परन्तु लेख में हम भय के कारणों का और योगी उनसे कैसे उपराम रहता है, वर्णन करेंगे···

सबसे अधिक भय मनुष्य को मौत का होता है—क्योंकि मनुष्य का सबसे ज्यादा प्यार स्वयं की देह से होता है, वह बहुत काल से देह भान में रहा है इसलिए देह को छोड़ना नहीं चाहता। परन्तु एक सच्चे योगी का प्यार आत्मा में होता है, वह देह को तो एक वस्त्र के न्याई ही समझता है और जिसे उतार कर दूसरे पहनने मात्र को ही वह मौत या एक खेल समझता है। इसलिए उसे मौत से भय नहीं होता। वह तो जानता है कि शरीर लेना, छोड़ना, यही तो इस सृष्टि नाटक के चलने का साधन है, अगर यह क्रिया न हो तो यह नाटक कैसे चले। सच्चा योगी तो जीते जी मर चुका होता है, वह मौत से पहले ही स्वयं को देह से निर्लिप्त कर लेता है—इसलिए योगी मौत से नहीं डरता। इसे ही काल पर विजय भी कह सकते हैं। क्योंकि सच्चे योगी की मृत्यु सम्पूर्ण स्मृति स्वरूप की स्थिति में होती है।

दूसरी मुख्य बात—भय होता ही पापी को। पाप ही मनुष्य को डसता है, पाप ही मनष्य को कमजोर बनाता है। अज्ञानी जन कदम-कदम पर पाप करते हैं, भूल करते हैं, इसलिए भयभीत होते हैं। परन्तु योगी तो कर्म की गुह्य गति को जानता है। इसलिए वह पाप से मुक्त हुआ कभी भयभीत नहीं होता।

मनुष्य को अपनी मान-शान का भी भय होता है कि कहीं कोई उसका निरादर न कर दे, कहीं उसकी शान समाप्त न हो जाए। वास्तव में ये भी बड़े सीमित विचार हैं। महान पुरुषों की ये धारणा नहीं होती और योगी जो सर्व महान है वह तो मान शान को काग विष्ठा के समान समझता है— उसे भी मान मिलता है स्वयं धर्मराज से। उसका तो समस्त विश्व मान करता है। उसे अल्पकालीन मान डोलाय-मान नहीं करता इसलिए वह सदा निर्भय रहता है। वास्तव में तो योगी कर्म करने की कला में कुशल होता है और वह ऐसे कर्त्तव्य ही नहीं करता जो उसे अपमान का शिकार होना पड़े। उसका तो तेज समस्त संसार में चन्द्रमा की चाँदनी की तरह छटकता है।

सांसारिक मनुष्यों की एक-दो में शत्रुता रहती है इसलिए एक-दो का भय जीवन पर्यन्त बना रहता है। परन्तु सच्चे योगी का तो सम भाव, सर्व से प्रेम होता है, उसका इस संसार में कोई शत्रु नहीं। वह तो समस्त संसार को अपना परिवार समझता है, सभी तो उसके अपने हैं फिर भला वह किससे दुश्मनी रक्खे, किससे ईर्ष्या, द्वेष करे। इस प्रकार सभी को आत्मिक भाव से देखता योगी सदा निर्भयता के सिंहासन पर आसीन रहता है।

भय के कारण ही मनुष्य को अनेक व्यर्थ संकल्प अथवा कमजोर संकल्प चलते हैं जिससे उसकी कमजोरी और ही बढ़ती जाती है। परन्तु योग द्वारा आत्मा में सर्व शक्तियों का आविर्भाव होता है।

योग से आत्मा का मनोबल बहुत बढ़ जाता है—असत्यता उससे दूर हो जाती है। सत्यता जहाँ है, वहाँ भय क्यों। योगी माना सत्य, असत्यता ही तो मनुष्य के भय का बड़ा कारण है। परन्तु योगी सदा सर्व को सत्य राह दिखाना और सत्य का रहस्योद्घाटन करने में भयभीत नहीं होता।

योगी अर्थात् जो सदा सर्वशक्तिवान के साथ हो, जिसका साथी स्वयं भगवान हो, जिसके ऊपर स्वयं सर्वशक्तिवान की छाया है, जो सदा उसी की रक्षा में जीता हो, भला सोचो, क्या कोई उसका बिगाड़ सकता है। जिन्हें उस परमपिता की शक्तियों पर सम्पूर्ण निश्चय होता है, वो किन्हीं भी परिस्थितियों में भयभीत नहीं होता। स्वयं भगवान के ही महावाक्य हैं "जो सदा मुझे अपना साथी बनाते है, मनुष्य तो क्या, स्वयं प्रकृति भी उनकी रक्षा करती है।" सच्चे योगी को प्रकृति के प्रकोप, जंगली जानवरों, चोर, डाकुओं से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं क्योंकि साथी स्वयं भगवान है।

वास्तव में भय एक बहुत बड़ा विघ्न है जो मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देता। योगी को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भय को सदा के लिए तिलांजली दे देनी चाहिए। जब योगी बेगमपुर का बादशाह बने तब ही सर्व कार्यों में सफल हो। अगर भय है—तो योग की एक स्थाई और एकरस स्थिति प्राप्त नहीं की जा सकती। योगी की तुलना हम शेर से करते हैं, जैसे शेर जंगल का राजा है—योगी भी विश्व का बादशाह है। जैसे एक राजा निर्भय होता है, योगी भी सदा शेर की तरह निर्भीक होता है।

योगी के पास विश्व की सबसे बड़ी शक्तियाँ रहती हैं। ब्रह्मचर्य का सर्व श्रेष्ठ बल उसके अंग-अंग में समाया होता है। ज्ञान और योग की असीम शक्तियाँ सदा उसकी रक्षा करती हैं। विज्ञान से भी ज्यादा शक्ति एक योगी की होती है। उसके तो संकल्पों से ही सर्व कार्य सिद्ध होते हैं। डर तो विकारी मानव को होता है। जिसने पांच महा बैरियों को जीत लिया है—उसे बाकी डर किसका। जो योगी सदा अपनी शक्तियों की अनुभूतियों में रहते हैं, वो सदा निडर जीवन जीते हैं।

वास्तव में अज्ञान ही मनुष्य के डर का कारण है—"पता नहीं"—ये शब्द मनुष्य को भयभीत करते हैं परन्तु योगी को तो सब कुछ पता होता है। सर्व ज्ञान का त्रिकालदर्शी होने के कारण उसे हार जीत का भी भय नहीं होता। हार उसकी होगी भी क्यों अगर हार होती भी है तो वह उस से भयभीत न होकर पुनः जीत का पुरुषार्थ करता है। □

हे योगियो···अपने से पूछो···तुम्हें भय किसका। तुमने तो अपनत्व का भी त्याग कर दिया—तुम स्वप्न में भी भयभीत न होओ। आज तक विश्व में जिन योद्धाओं ने क्रान्ति लाई, जिन्होंने कई बार विश्व को नया मोड़ दिया है, उसका कारण उनकी निर्भीकता थी। भय उनके किसी भी अंग से प्रतिभासित नहीं होता था। भय के भूत को भगाकर अपनी जान की बाज़ी लगाकर, विघ्न सहकर, उन्होंने संसार को चमत्कार दिखाया था। तुम्हें भी इस जग को नया बनाना है। सत्य धर्म की स्थापना की जिम्मेदारी तुम्हारी ही है। दुखी, अशान्त, तड़पती और भयभीत आत्माओं को तुम्हें ही शीतल करना है, इसलिए विघ्नों से डरो नहीं, विघ्न तो तुम्हारे सहायक हैं, तुम्हें बलवान बनाते हैं। उठो निर्भयता के बल पर संसार में आध्यात्मिक क्रान्ति फैला दो।

क्लास के लिये प्रश्न

ब्र० कु० कमलमणि, कृष्णा नगर, देहली

1. कदम-कदम में पद्मों की कमाई का सहज साधन क्या है ?
2. कर्म बन्धन से मुक्त स्थिति का अनुभव करने का क्या पुरुषार्थ है ?
3. पुण्यात्मा बनने के लिये किस स्मृति में निरन्तर रहें ?

क्लास में विचार कीजिये, उत्तर अगले अंक में प्रकाशित होंगे।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

(ब्र० कु० श्रीराम तथा ब्र० कु० सत्यनारायण, कृष्णा नगर, दिल्ली द्वारा संकलित)

इस मास भी पिछले महीनों की भाँति ब्रह्माकुमारी ई० वि० विद्यालय के सेवा केन्द्रों द्वारा उत्साहवर्द्धक और प्रेरणादायक समाचार मिले हैं साराँश इस प्रकार है—

मालवीय नगर—(दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से गोविन्दपुरी (कालका जी) में प्रथम बार 10 दिन के लिए मानव उत्थान शान्ति मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी ने किया। मुख्य अतिथि जस्टिस जसवन्तसिंह, कमीशन के चेयरमैन तथा भ्राता तातारी जी थे। मेले से कई हजार आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया तथा योग शिविरों से भी 1000 भाई-बहिनों ने अनुभव प्राप्त किया।

भठिण्डा—सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि 2 नवम्बर से 9 नवम्बर तक एक आध्यात्मिक मेला मेन बाजार में गोल डिग्गी मार्किट की दूसरी मंजिल पर लगाया गया, जिसे हवाई मेले का नाम दिया गया। इस मेले का उद्घाटन दादी चन्द्रमणि तथा भ्राता जी० एस० गिल, डी० सी० ने 16 दीपक जलाकर किया। मेले से पूर्व प्रभात फेरी भी निकाली गई तथा डाक्टर्स का स्नेह मिलन भी रखा गया। मेले को देखने लगभग 60 हजार आत्माएँ आईं।

मथुरा—सेवा केन्द्र की ओर से छावनी के समीप पोद्दार स्कूल के मैदान में इस भव्य, आकर्षक मेले का उद्घाटन ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि के हस्तों द्वारा सम्पन्न हुआ। एक विशाल प्रेरणादायक शान्ति यात्रा भी निकाली गई। इस मेले में नव दुर्गा की चैतन्य झाँकी तो सारे नगर में एक चर्चा का विषय थी। इस मेले को लगभग 60,000 आत्माओं ने देखा तथा 400 आत्माओं ने योग शिविर किया जिनमें लगभग 80 आत्माएँ प्रतिदिन क्लास में आ रही हैं।

चिकडपल्ली—(हैदराबाद) से ब्र० कु० कुलदीप लिखती हैं कि 'आन्ध्र प्रदेश भक्ति भजन प्रचार समिति' की ओर से देवदाय धर्मदाय कार्यालय में 'भक्ति एवं भजन' का महत्त्व विषय पर प्रवचन दिया गया जिसमें 104 धार्मिक संस्थाओं ने भाग लिया। बाप-दादा के मुख्य-मुख्य गीत भी प्रस्तुत किए गए। इसी समिति द्वारा कीर्तन प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें लगभग 300 आत्माओं को बाप-दादा का सन्देश दिया गया।

बागलकोट—सेवा केन्द्र से प्राप्त समाचार के अनुसार 12 दिन के लिए विश्व-शान्ति मेले का आयोजन किया गया। इस मेले को प्रत्येक वर्ग के हजारों लोगों ने देखा और काफी आत्माओं ने योग शिविर भी किया।

लक्ष्मी नगर—(दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से दशहरे के अवसर पर त्रिदिवसीय 'आत्म-जागृति प्रदर्शनी' तथा योग शिविर का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी को लगभग 1000 आत्माओं ने देखा।

अमरेली—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि पाँचवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में विविध प्रकार से ईश्वरीय सेवा की गई। अमरेली शहर में, तखड़ा गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। सब जेल और लाडी नगर में राजयोग शिविर रखे गए। अन्धशाला में, पटेल कन्या छात्रालय में, बाबापुर में बहिनों के अध्यापन मन्दिर में, अमरापुर हाई स्कूल एवं अमरापुर गाँव में, चक्करगढ़ गांव में आध्यात्मिक प्रवचन किए गए। बाबरा, लाडी नगर तथा अमरेली शहर में चैतन्य देवियों की झाँकियाँ भी लगाई गई। इस प्रकार कुल मिलाकर लगभग 50,000 आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

नयागंज—(कानपुर) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दशहरे के उपलक्ष्य में सैण्ट्रल धर्मशाला में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया, जिसमें रामनवमी तथा दशहरे के त्यौहारों पर आध्यात्मिक रहस्य बताया गया, इसके अतिरिक्त पटकापुर के ल० ना० के मन्दिर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई। शीतला मन्दिर हुसैन गंज फतेहपुरी में भी प्रदर्शनी लगाई गई। चन्दीपुर (फतेहपुर) में एक सघन बाग में वृक्षों के ऊपर ही प्रदर्शनी लगाई गई, गाँव छोटा होने पर भी गांव की लगभग हर आत्मा ने शिव बाबा का दिव्य सन्देश प्राप्त किया।

भंडारा—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि

दशहरे के अवसर पर सुन्दर झाँकी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त मुरमाड़ी, दिधोरी, सावर बाँध शाहापुर तथा लाखनी में प्रवचन तथा राजयोग फिल्म द्वारा लगभग 3400 आत्माओं को शिव पिता का शुभ सन्देश दिया गया। तीन दिन के लिए एक विशेष तूफानी दौरे का कार्यक्रम रखा गया, जिसके अन्तर्गत एक मेटाडोर किराए पर लेकर लाउडस्पीकर, झंडियों आदि के साथ 13 तहसीलों के लगभग 60 शहरों और गाँवों के मुख्य सड़कों से घुमाते हुए लगभग 40,000 लोगों को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

घाटकोपर—(बम्बई) से ब्र० कु० नलिनी लिखती हैं कि राष्ट्रीयशाला में प्रोपैक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया, जिसके द्वारा लगभग 1000 विद्यार्थियों को तथा अन्य शिक्षक वर्ग को शुभ सन्देश दिया। इसके अतिरिक्त नवरात्रि के अवसर पर 4 दिन के लिए नौ देवियों की चैतन्य झाँकी सजाई गई, जिसका सारे शहर में तहलका मच गया। इस झाँकी को शहर के हर वर्ग के लोगों ने देखा, भक्तों ने विशेष भावुकता से देखा। इस प्रकार इस झाँकी से 40,000 आत्माओं ने लाभ उठाया।

अमरावती—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि गत मास दर्यापुर, परतवाड़ा, तछे गाँव आदि स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचन हुए, जिनके द्वारा लगभग 2000 आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया गया। नवरात्रि के अवसर पर विदर्भ में दस दिन के लिए 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसमें चैतन्य देवियों की झाँकी विशेष आकर्षण का केन्द्र थी। प्रदर्शनी को शहर के हर वर्ग के लोगों ने देखा, जिनमें कुछ मन्त्रीगण तथा अन्य विशिष्ट व्यक्ति भी शामिल हैं।

मऊनाथ भंजन—(उ० प्र०) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि रसड़ा (बलिया) में 4 दिन के लिए जूनियर हाई स्कूल में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी को लोगों ने बड़े उत्साहपूर्वक देखा, लगभग 4000 आत्माओं को बाबा का शुभ सन्देश दिया गया।

कोसी कलाँ—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सीता लिखती हैं कि दशहरे एवं भरत मिलाप के अवसर पर दो दिन के लिए प्रदर्शनी एवं झाँकी का आयोजन किया गया, जिसके द्वारा काफी आत्माओं की सेवा हुई।

रायपुर—सेवा केन्द्र की ओर से दुर्ग (म० प्र०) में 10 दिन के लिए स्थानीय जैन धर्मशाला में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी से लगभग 2000 आत्माओं ने लाभ उठाया और 400 आत्माओं ने योग शिविर किया।

वेरावल—उपसेवा केन्द्र से ब्र० कु० रमीला लिखती हैं कि नवरात्रि के पावन पर्व पर कस्तूरबा महिला मंडल में तीन देवियों की झाँकी सजाई गई, जिनके द्वारा 6000 आत्माओं ने शिव-सन्देश प्राप्त किया। दशहरे के दिन "सोनी जाति की वंडी" में चैतन्य झाँकी सजाई गई तथा दशहरे, नवरात्री का आध्यात्मिक रहस्य भी समझाया गया। इस कार्यक्रम से लगभग 2000 आत्माएँ लाभान्वित हुईं।

भुवनेश्वर—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि राजधानी के चारों ओर आदिवासियों को सन्देश देने के लिए दसयाला गाँव में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त खलीकोट शहर के आसपास के गाँवों—चिनगुडीखोला, कांटापाडा, पुस्तापुर, बेगुजिया आदि गाँवों में चलती-फिरती प्रदर्शनियों द्वारा हजारों आत्माओं को सन्देश दिया गया। दशहरे के उपलक्ष्य में भुवनेश्वर में राजमहल पर 5 दिन के लिए प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें अनेकानेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

लखनऊ—सेवा केन्द्र की ओर से सीतापुर शहर में चरित्र-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं बालयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अलावा एक प्रैस कान्फ्रैंस का भी आयोजन किया गया जिसमें 17 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। शिक्षक सम्मेलन में मुख्य विषय—'शिक्षा में आध्यात्मिकता का महत्त्व' रखा गया।

झांसा—(कुरुक्षेत्र) से ब्र० कु० प्यारेराम जी लिखते हैं कि वहां चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन बड़ी धूमधाम से किया गया। झाँकियों सहित शोभा यात्रा निकाली गई। लगभग 3000 की जनता ने सारा कार्यक्रम बड़ा रुचिपूर्ण सुना। "स्वर्ग में एक सीट खाली है" नाटक भी दिखाया गया।

बोरीवली—(बम्बई) सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि प्रशासनिक अधिकारियों तथा अन्य अधिकारियों के लिए माउँट आबू में त्रिदिवसीय योगशिविर का आयोजन किया गया, जिससे 30 शिविरार्थियों ने लाभ लिया। सभी ने शराब, बीडी, सिगरेट आदि नशीली वस्तुओं का सेवन न

करने का दृढ़ संकल्प लिया।

कलकत्ता—सेवा केन्द्र से बिन्दु बहन लिखती हैं कि दुर्गा उत्सव के अवसर पर कालीघाट में सत्यनारायण पार्क, बजबज, विहाला, भवानीपुर, हरीश मुखर्जी पार्क, श्रीरामपुर, लिलुआ, श्यामनगर आदि आठ स्थानों पर झाँकियों, मॉडलस सहित आध्यात्मिक प्रदर्शनियों द्वारा शिव बाबा का दिव्य सन्देश दिया गया। जिससे लाखों लोगों ने लाभ लिया।

भोपाल—सेवा केन्द्र की ओर से गत मास पाँच विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। (i) विशाल राज योग भवन का शिलान्यास समारोह, (ii) विश्व-शान्ति सम्मेलन, (iii) कन्याओं द्वारा दृढ़ संकल्प समारोह, (iv) नौ देवियों की चैतन्य झांकी, (v) चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी। इनके द्वारा मन्त्री वर्ग की भी सेवा हुई।

मणिनगर—(अहमदाबाद) सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि 'नवरात्रि-महोत्सव' के अवसर पर नवा गाम, मणिनगर, कालूपुर और ईसनपुर में पाँच देवियों की चैतन्य झाँकी तथा आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, विजय दशमी के दिन दो झांकियाँ निकाली गई तथा रावण-दहन के अवसर पर प्रवचन किया गया।

डालीसब्रिज (अहमदाबाद) सेवा केन्द्र की ओर से जिवराज पार्क, पालड़ी में तथा लॉ-कालेज ग्राउंड में चैतन्य देवियों की झाँकी तथा आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिनसे अनेक आत्माएँ लाभान्वित हुईं।

भावनगर—में लक्ष्मी एपार्टमेंट, मारी गांव, कुमुदबाड़ी, तरसमीया गांव, देव बाग आदि स्थानों पर प्रवचन, स्लाइड शो, प्रदर्शनी तथा योग शिविर आदि द्वारा शिव पिता का सन्देश दिया।

रुड़की—नेहरू स्टेडियम में एक विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त नगरपालिका हाल में भी त्रिदिवसीय चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। दोनों प्रदर्शनियों से शहर की हजारों आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

संकेश्वर—सेवा केन्द्र की ओर से मुनबल्ली नामक गांव में 7 दिन के लिए ज्ञान, योग शिविरों का आयोजन किया गया, जिसमें दशहरे का आध्यात्मिक रहस्य, संस्था का परिचय तथा शिव पिता का सन्देश दिया गया। इससे वहां के लोग बहुत प्रभावित हुए।

हिसार—सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि हिसार में नव निर्मित सहज राज योग केन्द्र का उद्घाटन समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया, जो कि आदरणीय दीदी मनमोहिनी जी एवं यहाँ के डिप्टी कमिश्नर महोदय के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त बरवाला ब्रांच में प्रति सप्ताह भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

जालंधर—में नव विश्व आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन दादी चन्द्रमणि तथा भ्राता रामलाल चिट्टी की अध्यक्षता में हुआ। इसका समाचार जालंधर दूरदर्शन द्वारा भी प्रसारित किया गया तथा दैनिक समाचार-पत्रों में भी छपा। इस मेले से लगभग 40,000 आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। योग शिविरों द्वारा भी 200 आत्माओं ने अनुभव प्राप्त किए।

आगरा—में शिव मन्दिर में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, साथ-साथ प्रवचन और नाटक आदि भी किए गए जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया। दीदी जी के आगरा पहुँचने पर उनका स्वागत समारोह मनाया गया, जिसमें उन द्वारा किए गए प्रवचन द्वारा अनेक विशिष्ट व्यक्ति प्रभावित हुए।

सिन्दरी—सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि त्रिदिवसीय विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी को सिन्दरी खाद कारखाने के हर वर्ग के लगभग 6-7 हजार लोगों ने देखा।

बालेश्वर—सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि दशहरे के अवसर पर 5 रोज के लिए स्थानीय जिला स्कूल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके साथ-साथ त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। प्रदर्शनी तथा योगशिविर से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

कल्याण—में दुर्गा पूजा के अवसर पर बहुत बड़ा मेला लगता है, जिसमें एक स्टाल लेकर चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी रखी गई थी। जिसको 25000 लोगों ने देखा। इसके अतिरिक्त कल्याण रेलवे स्टेशन के पास चैतन्य देवियों की झाँकी सजाई गई जिसको अनेकानेक आत्माओं ने बहुत रुचि से देखा।

पूना—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुन्दरी लिखती हैं कि नवरात्रि के अवसर पर शनिवार वाडा ग्राउंड पर एक सप्ताह के लिए चैतन्य शिव शक्तियों की झांकी, राजयोग

प्रदर्शनी और राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इनसे लगभग 2 लाख आत्माओं ने शिव बाबा का सन्देश प्राप्त किया।

बड़ौदा—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि एक मृत्यु प्रसंग के अवसर पर बड़ौदा में सप्ताह कोर्स और पादरा में प्रवचन कार्यक्रम से लगभग 70 आत्माओं ने लाभ उठाया।

जामनगर—सेवा केन्द्र से ब्र० कु० सुषमा लिखती हैं कि तालुका गाँव जोड़िया में दो दिन की प्रदर्शनी और शिविर रखा गया। इसके अतिरिक्त रणजीत में 3 दिन की प्रदर्शनी लगाई गई जिससे भी 5000 आत्माओं ने लाभ उठाया।

नारायणगढ़—(नेपाल) सेवा केन्द्र से ब्र० कु० शीला लिखती हैं कि भक्तपुर शहर में 3 दिन भव्य हाल लेकर चरित्र निर्माण प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन भ्राता उपेन्द्र जी ने किया। साथ-साथ प्रवचन, भाषण, गीत आदि का कार्यक्रम भी रखा गया। इसके अतिरिक्त काठमांडू के मुख्य-मुख्य स्थानों पर राजयोग फिल्म भी दिखाई जा रही है। प्रदर्शनी से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

पाली—सेवा केन्द्र की ओर से श्रीराम जी के मन्दिर में प्रवचन किया गया। दशहरे के अवसर पर डिस्ट्रिक्ट लायब्रेरी में त्रिदिवसीय विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे अनेकानेक आत्माएं लाभान्वित हुई।

राउरकेला—सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि दुर्गा पूजा के अवसर पर सार्वजनिक मेले में एक स्टाल लेकर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। मेले में आई हुई अनेक आत्माओं ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया।

दार्जिलिंग—सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि यहाँ 'गांटुक' में, 'सिंगताम' में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिनसे अनेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। 'तादुम' में भी दो बार प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। दार्जिलिंग में 'प्रेमचन्द संघायतन' का उद्घाटन करने के लिए पधारे भ्राता भैरवदत्त पांडेय को साहित्य भेंट किया गया।

विदेश सेवा समाचार

इंडोनेशिया—से प्राप्त समाचारों के अनुसार वहाँ की स्थानीय भाषा में साप्ताहिक पाठ्यक्रम छपवाकर सेवाएँ की जा रही हैं। दलाई लामा के इंडोनेशिया पधारने पर ब्र० कु० बहिनों द्वारा ईश्वरीय साहित्य भेंट किया गया। दो हठयोग केन्द्रों पर, गांधी मेमोरियल इंटरनेशनल स्कूल में, यूनिवर्सल पैरासाइकालिज फाउंडेशन में ब्र० कु० बहिनों द्वारा राजयोग के अभ्यास तथा प्रवचनों के कार्यक्रम किए गए।

बारबोडोज—में सभी धर्म संस्थाओं द्वारा मिलकर 'फर्स्ट फाउंड फैस्टिवल' नाम से एक आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय का भी एक मंडप लगाया गया। यहाँ के सभी अखबार, रेडियो, टेलीविजन वालों ने इस मेले का विशेष रीति से प्रचार किया। जानकी दादी ने भी मेले में भाग लेकर अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दिया।

हरारे—समाचार मिला है कि हरारे सेवा केन्द्र की इन्चार्ज बहनें जिम्बाबवे के राष्ट्रपति से जब मिलीं तो उन्हें ईश्वरीय साहित्य भेंट किया। साहित्य को उसी समय उन्होंने बहुत ध्यान से पढ़ा तथा ईश्वरीय कार्यविधियों की जानकारी प्राप्त की। इसके अलावा हरारे यूनिवर्सिटी में आयोजित एक विशाल कार्यक्रम में ६०० स्टूडेन्ट तथा यूनिवर्सिटी स्टाफ के सदस्यों के समक्ष "काले गोरों के भेद-भाव से छुटकारा" तथा मानसिक शान्ति पर बहनों ने अपना प्रवचन दिया तथा संगठित रूप में भी सभी को ३ मिनट के लिए विशेष शान्ति की अनुभूति भी कराई।

यह भी समाचार मिला है कि पूरे शहर में राजयोग के बारे में काफी चर्चा है। टी० वी० और रेडियो पर कई बार प्रवचन तथा राजयोग के इन्टरव्यू प्रसारित हुए हैं जिससे अनेकानेक आत्मायें प्रतिदिन कोर्स करने के लिए सेवा केन्द्र पर आती रहती हैं।

□

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा विकास प्रिण्टर्स, 1/7, गीता कालोनी, दिल्ली-31 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)--70